सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक

सांतसा

मासिक मुखपत्र

मधुमास, फाल्गुन–चैत्र २०६७ वि., फरवरी–मार्च २०१० ई.

१,९६,०८,५३,११२ सृष्टि संवत् वर्ष – १३ अंक – १

प्रकाशक

सांतसा न्यास

प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४,
स्मृतिनगर, भिलाईनगर, जि.दुर्ग, छत्तीसगढ़
० ७८८–२२८४८८४, ९९८१९२३२३०

सम्पादक : ब्र.अरुणकुमार "आर्यवीर"
पुनीत प्लाझा, फ्लैट १, प्लॉट १५,
सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुम्बई
९२२०५६९५९१, ९८९२९८९७२३
E-mail : aryaveer@rediffmail.com

<www.santasa.org>, <www.hellwithdemocracy.org>

यदि जीवन से लबालब भरे जीवन्त साधक को अचानक निर्णायक मण्डल से प्रतिभागियों के ही अनुरोध पर सिर्फ दो मिनट प्रतियागिता में प्रतियोगी के रूप में भाग लेने को कहा जाए और उसे बोलने का अप्रत्याशित, तात्कालिक जो विषय दिया जाए वह हो ''तुम कैसे मरना चाहोगे?'' तो क्या होगा?

एक- उसे प्रथम पुरस्कार मिलेगा। दो- उसे प्रथम पुरस्कार में पेन मिलेगा। तीन- उसे पहले ही किसी ने डायरी दे रखी होगी। चार- वह डायरी को पेन से भरेगा। पांच- वह छोटा फैशनेबल पेन मृत्यु को प्राप्त होगा। छै- दूसरे के दान प्रदत्त पेन से लेखन पूरा होगा। और सात- इस प्रकार डायरी भरने का विषय होगा 'मृत्यु'। यह संयोग मेरे साथ हुआ। अरुणभाई के हाथ 'मृत्यु' मेरे हाथ लिखी डायरी रूप में लगी।

आज 'मृत्यु' आपके हाथ में है।

यह "मृत्यु" पुस्तक की भूमिका साधना बल से इच्छामृत्यु वरण करनेवाले डॉ.क्षत्रिय जी द्वारा लिखी गई है। पुस्तक १८ मई २००० ई. को छपी थी। पाठक सम्पादक पते से इसकी प्रति या संगणकीय प्रतिलिपि प्राप्त कर सकेंगे... "आर्यवीर"

विशेषांक

अध्यात्म विज्ञान एवं साधना अंक

नक्षत्र, भाग्य, वास्तु, प्रजातन्त्र और स्वयं से घटिया की पूजा सबसे बड़े दुर्भाग्य हैं।

अति आत्म या एकी साधना

(संक्षिप्त प्रारूप)

स्थिरं सुखम् आसनम् ।।१।।

स्व आकलन ।।२।।

त्रि दीर्घ सम विपश्यना ।।३।।

दीर्घ समगति "अगाओ"

उच्चारण ।।४।।

सुचालनम् ।।५।।

पादयो:

ऊर्वो:

बाहुभ्यां यशोबलम्

करतलकरपृष्ठे

सुचालनम् ।।५।।

सुस्थिरम् ।।६।।

नाभि:

हृदयम्

कण्ठ:

शिर:

सुस्थिरम् ।।६।।

नवद्वारम् ।।७।।

पायु

उपायु

मुख

इस अंक में...

अति आत्म साधना............	०२
अगाओ...........................	०५
एकी चिकित्सा..................	०६
कर्मकाण्ड मन्त्रार्थ...............	१४
आत्मा का विज्ञान..............	२१
अति आण्विक भट्ठी...........	२४
सर्व धर्म समभाव प्रार्थना......	२७
आर्ष तिथि पत्रक...............	३०
आर्यसमाज सिद्धान्त सार....	३२
डॉ.क्षत्रिय पुण्य संस्मरण......	३३
सांतसा समाचार...............	३९

द्वि नाक

द्वि आंख

द्वि कान

नवद्वारम् ।।७।।

द्वि द्वारम् ।।८।।

नाभि

मूर्धा

द्वि द्वारम् ।।८।।

अष्टचक्र ।।९।।

भू: मूलाधार

जन:

स्व:

मह:

अनाहत:

तप:

भुव:

सत्यम् सहस्रार

अष्टचक्र ।।९।।

सप्त ऋषि ।।१०।।

वाक् वाक् ।।१०/१।।

अपरा

परा

पश्यन्ती

मध्यमा

वैखरी

अभिव्यक्ता

अव्यक्ता

वाक् वाक् ।।१०/१।।

प्राण: प्राण: ।।१०/२।।

प्राण

अपान

समान

व्यान

उदान

प्राण: प्राण: ।।१०/२।।

चक्षुः चक्षुः।।१०/३।।

सूर्य है ज्योति ज्योति है सूर्य स्वाहा
सूर्य है वर्च ज्योति है वर्च स्वाहा
ज्योति है सूर्य ज्योति है सूर्य स्वाहा
अग्नि है ज्योति ज्योति है अग्नि स्वाहा
अग्नि है वर्च ज्योति है वर्च स्वाहा
ज्योति है अग्नि ज्योति है अग्नि स्वाहा

चक्षुः चक्षुः।।१०/३।।

श्रोत्रं श्रोत्रम्।।१०/४।।

प्राची
दक्षिणा
प्रतीची
उदीची
ध्रुवा
ऊर्ध्वा
अदिति

श्रोत्रं श्रोत्रम्।।१०/४।।

सप्त ऋषि।।१०।।

पंच कोष।।११।।

अन्नमय कोष
प्राणमय कोष
मनोमय कोष
विज्ञानमय कोष
आनन्दमय कोष

पंच कोष।।११।।

पंच अवस्था।।१२।।

जागृत
स्वप्न
सुषुप्ति
तुरीय
तुरीयातीत

पंच अवस्था।।१२।।

पंच साधना।।१३।।

अन्तर्स्पर्श
अन्तर्रस
अन्तर्गन्ध
अन्तर्रूप
अन्तर्शब्द

पंच साधना।।१३।।

त्रि शरीर।।१४।।

स्थूल शरीर
सूक्ष्म शरीर
अव्याहत शरीर

त्रि शरीर।।१४।।

सप्त आत्म सप्त अति आत्म।।१५।।

सूक्ष्मतम में महानतम सूक्ष्मतम
सुकंपनशील में अकंपनशील सर्वगतिदाता
सत् चित् में सत् चित् आनन्द
चिद् बिन्दु में चिद् बिन्दु आनन्द
ब्रह्म निकटतम में दूर से दूरतम निकट से निकटतम
तत्वं सुपदार्थ में सर्वत्र सम
ब्रह्मित में खं ब्रह्म

सप्त आत्म सप्त अति आत्म।।१५।।

त्रि वाक्।।१६।।

आदि मध्य अन्त सम
अगाओ थम् अगाओ थम अगाओ थम्

त्रि वाक्।।१६।।

किसकी अर्चना उसकी अर्चना।।१७।।

आत्मधा आत्मदा
शृतधा शृतदा
अमृतधा अमृत छाया
ओजधा ओजदा
ऋतधा ऋतदा
बलधा बलदा
शृत्विजा ऋत्विजा
गृहनियंता हिरण्यगर्भा
पूर्णधा पूर्णदा

किसकी अर्चना उसकी अर्चना।।१७।।

अगाओ पूर्णम्।।१८।।

पूर्ण है यह
पूर्ण है वह
पूर्ण है यह वह
पूर्ण है
पूर्ण को कहते हैं पूर्ण

पूर्ण से पूर्ण आहर
पूर्ण ही बचता शेष
पूर्ण है अशेष
अगाओ पूर्णम्।।१८।।

मैं हूं पूर्ण में।।१९।।
तैरता सा दौड़ता
दौड़ता सा तैरता
उड़ता सा तैरता
तैरता सा उड़ता
अमृत हूं ओढ़ता
अमृत हूं बिछाता
अमृत हूं पीता
अमृत हूं जीता
मैं हूं पूर्ण में।।१९।।

अध्यात्म अवतरणम्।।२०।।
अगाओ आत्म में
आत्म अर्थ में
अर्थ बुद्धि में
बुद्धि चित् ज्ञान में
चित् ज्ञान मन में
मन ज्ञानेन्द्रियों में
ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियों में
कर्मेन्द्रियां सुपथ में
अध्यात्म अवतरणम्।।२०।।

शृत ऋत अवतरणम्।।२१।।
शृतम्भरा मेधा
ऋतम्भरा प्रज्ञा
ऋग्वेद वाक् में
यजुर्वेद मन में
सामवेद प्राणन में
अथर्ववेद इन्द्रियन में
आयुर्वेद तन में
नाट्यवेद जीवन में
शृत ऋत अवतरणम्।।२१।।

सुजीवनम्।।२२।।
ज्ञान श्रम तप नियम सुरचना
श्री समृद्धि यशमयी सुरचना
धर्म अर्थ काम मोक्ष सुजीवनम्
सुजीवनम्।।२२।।

पवित्र अवतरणम्।।२३।।
आरोह इमं सुखं रथम्
अगाओ आत्म पवित्र
अगाओ आत्म में
आत्म अन्तर् अस्तित्व पवित्र
अन्तर् अस्तित्व आत्म में
अन्तर् अस्तित्व प्रज्ञा पवित्र
अन्तर् अस्तित्व प्रज्ञा में
अन्तर् ज्योति नेत्र पवित्र
अन्तर् ज्योति नेत्र में
अन्तर् शब्द कर्ण पवित्र
अन्तर् शब्द कर्ण में
अन्तर् गन्ध नासिका पवित्र
अन्तर् गन्ध नासिका में
अन्तर् रस रसना पवित्र
अन्तर् रस रसना में
अन्तर् स्पर्श त्वक् पवित्र
अन्तर् स्पर्श त्वक् में
अन्तर् स्वर कण्ठ पवित्र
अन्तर् स्वर कण्ठ में
अन्तर् अक्षर वाक् पवित्र
अन्तर् अक्षर वाक् में
अन्तर् महत् हृदय पवित्र
अन्तर् महत् हृदय में
अन्तर् स्फुरण नाभि पवित्र
अन्तर् स्फुरण नाभि में
अन्तर् बल तन पवित्र
अन्तर् बल तन में
अन्तर् ओज अन्त:करण पवित्र
अन्तर् ओज अन्त:करण में
खं ब्रह्म सर्वत्र पवित्र
खं ब्रह्म सर्वत्र में
अगाओ सर्वत्र पवित्र
अगाओ सर्वत्र में
पवित्र अवतरणम्।।२३।।

शत अधिकम् जीवनम्।।२४।।
तब अब तब अगाओ ब्रह्म
अस्थाई अब हम
अगाओ युजित हम
देखें अगाओ शत अधिकम्

सुनें अगाओ शत अधिकम्
श्वासें अगाओ शत अधिकम्
कहें अगाओ शत अधिकम्
आस्वादें अगाओ शत अधिकम्
स्पर्शें अगाओ शत अधिकम्
रहें अगाओ शत अधिकम्
आरोहें अगाओ शत अधिकम्
स्वस्थ अगाओ शत अधिकम्
अदीन अगाओ शत अधिकम्
शत अधिकम् जीवनम्।।२४।।
दिव्य शान्ति अवतरणम्।।२५।।
द्युतिशील शान्त प्राप्त
अन्तरिक्ष शान्त प्राप्त
आधार धरा शान्त प्राप्त
प्रवहणशील शान्त प्राप्त
औषध अनाज शान्त प्राप्त
वनस्पति रस शान्त प्राप्त
श्रृत शान्त प्राप्त
ऋत शान्त प्राप्त
महादेव शान्त प्राप्त
देव शान्त प्राप्त
प्रदेव शान्त प्राप्त
उपदेव शान्त प्राप्त
अगाओ शान्त प्राप्त
शान्ति शान्त प्राप्त
सर्व सामंजस्य शान्त प्राप्त
आधिदैविक शान्त प्राप्त
आधिभौतिक शान्त प्राप्त
अध्यात्म शान्त प्राप्त
दिव्य शान्ति अवतरणम्।।२५।।
दीर्घ सम गति "अगाओ" उच्चारण।।२६।।
त्रि दीर्घ सम विपश्यना।।२७।।
स्व आकलन।।२८।।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय
पी.एच.डी.(वेद), एम.ए.(आठ विषय), सत्यार्थ शास्त्री, बी.ई., एल.एल.बी.,
डी.एच.बी., पी.जी.डी.एच.ई.,एम.आई.ई., आर.एम.पी. (१०७५२)

"अगाओ"

अगाओ पूर्ण है। यह शब्द सशक्त अभिव्यक्ति है पूर्ण की। पूर्ण की अभिव्यक्ति के कई कई शब्द हैं। जिनकी अभिव्यक्ति घिस गई है वे शब्द अधूरे हैं गहन अर्थ में। "अ" बड़े गहरे से उभरता है। हर भाषा का पहला अक्षर है, हर अक्षर का आधार है। जन्म समय आदमी "अ" से रोकर पहली सांस लेता है.. मृत्यु समय आदमी "अ" से हिचक कर अन्तिम सांस लेता है.. गा मध्यमावस्था है.. "अ" इसके भी साथ है.. जिसका अर्थ है मध्यम उत्पन्न है आरम्भ से। उच्चारण में भी "गा", गायन में भी "गा"। मध्यम पूर्ण है जो आरम्भ से, अन्त से जुड़ा है। "गा" सामान्य जिन्दगी का प्रतीक है। "ओ" है आरम्भ का विस्तरण.. पूर्ण विस्तरण। "अ" की "आ" से "ओ" में होती है पूर्णता।

अ–आ–ओ...क्रमशः विस्तरण है,. व्यापकता है। "ग" जिन्दगी का छोटा सा अवक्षेप है। ये अवक्षेप निकल जाने पर अगाओ साधना पूर्ण होती है। अगाओ शब्द भी शब्द है....यह शब्द अगाओ नहीं है। अगाओ शब्द से बाहर है।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

एकी चिकित्सा

वर्तमान विश्व में कई चिकित्सा प्रणालियां हैं। जिनमें प्रमुख ये हैं- (१) एलोपॅथिक चिकित्सा प्रणाली, (२) होम्योपॅथी चिकित्सा प्रणाली, (३) आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली, (४) योग चिकित्सा प्रणाली, (५) प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली, (६) चुम्बक चिकित्सा प्रणाली, (७) जल चिकित्सा प्रणाली, (८) मिट्टी चिकित्सा प्रणाली, (९) रेकी चिकित्सा प्रणाली, (१०) एकी चिकित्सा प्रणाली, (११) समदाब चिकित्सा प्रणाली, (१२) अतिदाब चिकित्सा प्रणाली, (१३) समग्र चिकित्सा प्रणाली, (१४) बिना मेड़िकल शिक्षा चिकित्सा प्रणाली, (१५) रविरश्मि चिकित्सा प्रणाली, (१६) रंग चिकित्सा प्रणाली, (१७) मम चिकित्सा प्रणाली, (१८) न मम चिकित्सा प्रणाली, (१९) गंध चिकित्सा प्रणाली, (२०) होम चिकित्सा प्रणाली, (२१) चाय रोटी चिकित्सा प्रणाली, (२२) ज्वारा गेहूं सत चिकित्सा प्रणाली, (२३) स्व-निर्देश चिकित्सा प्रणाली, (२४) स्वाद चिकित्सा प्रणाली, (२५) सम्मोहन चिकित्सादि।

इन सारी चिकित्सा प्रणालियों का हम स्तरीकरण आत्मा के आधार सिद्धान्त जो सांख्य दर्शन से लिया गया है मान सकते हैं। सांख्य में पच्चीस तत्त्वों की गणना दी हुई है जो इस प्रकार सूत्रबद्ध है- सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः। प्रकृतेर्महान महतो ऽ हंङ्कारो ऽ हंङ्कारात्पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः।।

१. शुद्ध, मध्य, जड़ तीन मिश्र होकर संघात साम्य है प्रकृति सूक्ष्म। २. प्रकृति सूक्ष्म पर अकंपनशील गतिदाता परमात्मा द्वारा प्रकम्पन प्राप्त आत्मा के अपदार्थी संघात से निर्मित होता है अर्थ महान और ३. अर्थ महान से संयुक्त होती है बुद्धि- महत्तत्व। ४. जिससे उत्पन्न होता है अहंकार (यही प्रकृति में होते हैं सूक्ष्म भूत उतरते हैं तन में) ५. अहंकार से होता है मन। ६. मन सूक्ष्मभूत युजित से ज्ञानेन्द्रियां और फिर कर्मेन्द्रियां और पांच तन्मात्राओं से पांच स्थूलभूत। सिलसिलेवार पच्चीसों का अहसास है सांख्य विज्ञान। क्रमबद्ध ये पच्चीस इस प्रकार हैं- १. पुरुष- परमात्मा, २. पुरुष- आत्मा, ३. अर्थ संघात- प्रकृति, ४. महत्तत्व- बुद्धि, ५. मन, ६. ज्ञानेन्द्रियां- पांच, ७.सूक्ष्मभूत- पांच, ७. कर्मेन्द्रियां- पांच, ८. स्थूलभूत- पांच।

उपरोक्त सारी चिकित्सा प्रणालियां सांख्य दर्शन के इन आठ स्तरों में स्तरीकृत की जा सकती हैं। आत्मा स्तर से छूती प्रणाली मात्र एकी चिकित्सा प्रणाली ही है। एकी चिकित्सा प्रणाली में सर्व पच्चीस तत्वों का समुचित वैज्ञानिक समावेश है।

कठोपनिषद २/३/७÷८ में १/३/३÷११ में ऐसा ही क्रम दिया है। यह पूरा अद्‌भुत एकी चिकित्सा विज्ञान है। संक्षेप में यह इस प्रकार है.. विषय रास्ते, इन्द्रिय घोड़े, मन लगाम, बुद्धि सारथी, आत्मा रथी। आत्मा रथी ब्रह्म ज्ञानमय सशक्त, बुद्धि नियंत्रित, मन संयमित घोड़े

संयमित, विषय सात्विक- एकी स्वास्थ्य विज्ञान है। यही परमपद प्राप्ति विधान है। तन संयुक्त, विषय, इन्द्रिय (कर्म फिर ज्ञान), सूक्ष्मभाव (शब्दादि), मन, बुद्धि, जीवात्मा, आत्मा, अव्यक्त (अव्यक्तार्थ ब्रह्म का), पुरुष। यह परमतम, सूक्ष्मतम, महानतम है। इस सिद्धान्त का निरूपण गीता में भी है।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।। (३/४२) **एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।।** (३/४३) इसका सरलार्थ यह है कि शरीर से कर्मेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियों से ज्ञानेन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियों से मन, मन से बुद्धि, बुद्धि से अर्थ, अर्थ से आत्मा, आत्मा से परमात्मा परे है।

एकी चिकित्सा संक्षिप्त प्रारूप

अति आत्म साधना का स्वास्थ्य हेतु व्यवहार प्रयोग एकी चिकित्सा है। एकी चिकित्सा प्रारूप इस प्रकार संक्षिप्त रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

(१) स्थिरं सुखम् आसनम् :- *तन की अतनाव अवस्था।* **(२) स्व-आकलन** :- अ) *सिर पर मूर्धा स्थान पर हाथ,* ब) *मूर्धा स्वर 'ऋ' तथा 'लृ' का उच्चारण,* स) *हाथ में प्रकम्पन अहसास (प्रकम्पन मात्रा स्मरण रखें)।* **(३)** *तीन बार श्वास प्रश्वास देखना।* **(४)** *दीर्घ स्वर* **"अगाओ"** *या इष्ट नाम पूरी सांस भर लें।* **(४) सुचालनम्** :- अ) द्वि पाद, ब) द्वि ऊरू, स) द्वि भुजा, द) द्वि कर। **(५) सुस्थिरम्** :- अ) नाभिः, ब) हृदयम्, स) कण्ठः, द) शिरः, **(६) नवद्वारम्** :- १) पायुः, २) उपायुः, ३) मुख, ४,५) द्वि नाक, ६,७) द्वि चक्षु, ८,९) द्वि कान। **(७) अव्यक्त द्वारम्** :- अ) नाभिः, ब) सहस्रार। **(८) अष्टचक्र** :- १) मूलाधार भूः, २) जनः, ३) स्वः, ४) महः, ५) अनाहतः, ६) तपः, ७) भुवः, ८) सहस्रार सत्यम्। **(९) सप्त ऋषि :- अ) वाक् वाक्,** १) अपरा, २) परा, ३) पश्यन्ती, ४) मध्यमा, ५) वैखरी, ६) अभिव्यक्ता, ७) अव्यक्ता- अपरा। **ब,स) प्राणः प्राणः** :- १) प्राण, २) अपान, ३) समान, ४) व्यान, ५) उदान। **द,ई) चक्षुः चक्षुः** :- १) सूर्यः ज्योतिः, २) वर्चः ज्योतिः, ३) ज्योतिः सूर्यः, ४) अग्निः ज्योतिः, ५) वर्चः ज्योतिः, ६) ज्योतिः अग्निः। **फ,य) श्रोत्रं श्रोत्रम्** :- १) प्राची, २) दक्षिणा, ३) प्रतीची, ४) उदीची, ५) ध्रुवा, ६) ऊर्ध्वा, ७) अदिति। **(१०) पंचकोष** :- १) अन्नमय, २) प्राणमय, ३) मनोमय, ३) विज्ञानमय, ५) आनन्दमय। **(११) पंच अवस्था** :- १) जागृत, २) स्वप्न, ३) सुषुप्ति, ४) तुरीय, ५) तुरीयातीत। **(१२) पंच साधना** :- १) अन्तर्स्पर्श, २) अन्तर् रस, ३) अन्तर्गन्ध, ४) अन्तरूप, ५) अन्तर्शब्द, *(पंच साधना त्रिचरणीय है- अन्तर्मौन, अन्तर्सोऽम्, अन्तर्-ओऽम्)* **(१३) त्रि शरीर** :- १) स्थूल, २) सूक्ष्म, ३) अव्याहत।

उपरोक्त १३ चरण स्व-चिन्तन के अतन्द्रा या स्व-तन्द्रा चरण हैं। **(१४) सप्त आत्म**

:- १) सूक्ष्मतम, २) सुकम्पनशील-कम्पनदाता, ३) सत्-चित्, ४) चिद्-बिन्दु, ५) ब्रह्म निकटतम, ६) तत्त्वं सुपदार्थम्, ७) ब्रह्मस्थ। **(१५) सप्त अति-आत्म** :- १) सूक्ष्मतम-महानतम, २) अकंपनशील गतिदाता, ३) सत्-चित-आनन्द, ४) चिद्-बिन्दु-आनन्द, ५) दूरतम-निकटतम, ६) सर्वत्र सम, ७) खं ब्रह्म। **(१६) सप्त आत्म सप्त अति-आत्म :-** १) सूक्ष्मतम में महानतम-सूक्ष्मतम, २) सुकम्पनशील में अकम्पनशील गतिदाता, ३) सत-चित में सत्-चित-आनन्द, ४) चिद्-बिन्दु में चिद्-बिन्दु-आनन्द, ५) ब्रह्म निकटतम में दूरतम-निकटतम, ६) तत्त्वं सुपदार्थम् में सर्वत्र सम, ७) ब्रह्मस्थ में खं ब्रह्म। **(१७) त्रि वाक्** :- अ) आदि मध्य अन्त सम, ब) अगाओ थम, स) अगाओ थम, द) अगाओ थम *(अगाओ की जगह कोई भी इष्ट ले सकते हैं)*। **(१८) अगाओ पूर्णम्** :- अ) पूर्ण है यह, ब) पूर्ण है वह, स) पूर्ण है यह वह, द) पूर्ण है, ई) पूर्ण को कहते हैं पूर्ण, फ) पूर्ण से पूर्ण निकाल-पूर्ण ही शेष, य) पूर्ण है अशेष। **(१९) अगाओ अर्चना** :- अ) आत्मधा आत्मदा, ब) अमृतधा अमृतदा, स) शृतधा शृतदा, द) ऋतधा ऋतदा, ई) ओजधा ओजदा, फ) बलधा बलदा, र) शृत्विजा-ऋत्विजा, ल) गृहनियन्ता-हिरण्यगर्भा, व) पूर्णधा पूर्णदा। **(२०) पूर्णस्थ** :- अ) पूर्णानन्द बह रहा, ब) मैं तैरता सा दौड़ता, स) तैरता सा उड़ता, द) उड़ता सा तैरता, ई) अमृत ओढ़ना, फ) अमृत बिछौना, व) अमृत पीता, र) अमृत जीता *(उपरोक्त सात चरण- स्व अति आत्मन या अगाओऽन चरण है)*। **(२१) अति आत्म अवतरणम्** :- अ) अति आत्म आत्म में, ब) आत्म अर्थ में, स) अर्थ बुद्धि में, द) बुद्धि चित ज्ञान में, ई) चित ज्ञान मन में, फ) मन ज्ञानेन्द्रियों में, य) ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय में, र) कर्मेन्द्रिय सुपथ में। **(२२) ऋत शृत अवतरणम्** :- अ) शृतम्भरा मेधा, ब) ऋतम्भरा प्रज्ञा, स) ऋचा वाक् में, द) यजुर् मन में, ई) साम प्राण में, फ) अथर्व-इन्द्रियों में, य) आयुर्वेद तन में, र) नाट्यवेद जीवन में, ल) जीवन परहित में। **(२३) पवित्र अवतरणम्** :- अ) आत्म-अन्तर्-अस्तित्व पवित्र, ब) अन्तर्-अस्तित्व प्रज्ञा पवित्र, स) अन्तर्ज्योति नेत्र पवित्र, द) अन्तर्शब्द कर्ण पवित्र, ई) अन्तर्गन्ध नासिका पवित्र, फ) अन्तर्-रस रसना पवित्र, य) अन्तर्स्पर्श त्वक् पवित्र, र) अन्तर्स्वर कण्ठ पवित्र, ल) अन्तर् अक्षर वाक् पवित्र, व) अन्तर्महत् अन्तस् पवित्र, श) अन्तर्स्फुरण नाभि पवित्र, स) अन्तर्बल तन पवित्र, ह) अन्तर्-ओज अन्तःकरण पवित्र, क्ष) खं ब्रह्म सर्वत्र पवित्र। **(२४) आरोह इमं सुखं रथम्** :- अ) आत्म अन्तर् अस्तित्व में, ब) अन्तर् अस्तित्व प्रज्ञा में, स) अन्तर्ज्योति नेत्र में, द) अन्तर्शब्द कर्ण में, इ) अन्तर्गन्ध नासिका में, फ) अन्तर्-रस रसना में, य) अन्तर्स्पर्श त्वक् में, र) अन्तर्स्वर कण्ठ में, ल) अन्तर्-अक्षर वाक् में, व) अन्तर्महत्-अन्तस् में, श) अन्तर्स्फुरण नाभि में, स) अन्तर्बल तन में, ह) अन्तर्-ओज अन्तःकरण में, क्ष) खं ब्रह्म सर्वत्र। *(उपरोक्त चार चरण स्व-स्थीकरण, स्व-अस्तिकरण, स्व-आधीनीकरण, स्व-तन्त्रीकरण, स्व-यमीकरण, स्व-रमीकरण, स्व-आलंबनीकरण के हैं।*

(२५) सुजीवनम् :- अ) ज्ञान, श्रम, नियम, तप- सुरचना; ब) यशोमई, श्री–मई, समृद्धिमई- सुरचना; स) सत्य, यश, श्री, आह्लाद, मित्रता आभर जीवन; द) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सुजीवनम्। **(२६) जीवेम शत-अधिकम्** :- अ) तब अब तब ब्रह्म, ब) अस्थाई अब हम, स) ब्रह्म युजित हम, द) देखें ब्रह्म शत अधिकम्, ई) सुनें ब्रह्म शत अधिकम्, फ) श्वासें ब्रह्म शत अधिकम्, य) आस्वादें ब्रह्म शत अधिकम्, र) स्पर्शें ब्रह्म शत अधिकम्, ल) आरोहें ब्रह्म शत अधिकम्, व) रहें ब्रह्म शत अधिकम्, ह) अदीन ब्रह्मित शत अधिकम्। **(२७) दिव्य पर्यावरण** :- अ) द्युतिशील शान्त प्राप्त (स्थैर्य संतुलनमय) प्राप्त, ब) अन्तरिक्ष शान्त प्राप्त, स) आधार धरा शान्त प्राप्त, द) प्रवहणशील शान्त प्राप्त, ई) औषध अनाज शान्त प्राप्त, फ) वनस्पति रस शान्त प्राप्त, य) श्रुत शान्त प्राप्त, र) ऋत शान्त प्राप्त, ल) महादेव शान्त प्राप्त, व) देव शान्त प्राप्त, ह) प्रदेव शान्त प्राप्त, श) उपदेव शान्त प्राप्त, स) सर्व सामंजस्य शान्त प्राप्त, क्ष) ब्रह्म शान्त प्राप्त, क) शान्ति शान्त प्राप्त, ख) आधिभौतिक शान्त प्राप्त, ग) आधिदैविक शान्त प्राप्त, घ) आध्यात्मिक शान्त प्राप्त, ङ) शान्तिः शान्तिः शान्तिः *(उपरोक्त तीन चरण सुजीवनम् चरण हैं स्थैर्य संतुलन चरण हैं।* **(२८)** *दीर्घ स्वर* **"अगाओ"** *या इष्ट स्वर सम्पूर्ण दीर्घ श्वास के साथ कहना।* **(२९)** *तीन बार सांस को आते जाते सहज देखना।* **(३०)** *स्व आकलन* **(३१)** शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

एकी साधना का उच्च रूप पंच साधना द्वारा स्वस्वास्थ्य संस्थान सशक्त करना है। पंच साधना का स्थूल रूप स्व-उन्मेषीकरण है, व्यापक स्व-उन्मेषीकरण है- (३३ x ३२ x ३१ x. …… ३ x २ x १) देवताओं की क्रमशः अनुक्रम पंच देव व्यवस्था (कुल व्यवस्था ५ x ४ x ३ x २ x १ x ३३ x ३२ x ३१ x……. ३ x २ x १) का उन्मेषीकरण- क्रमशः साधना द्वारा पल्लवित होता होता तैंतीस, त्रि, एक में सिमटता सिमटता अशब्द, अस्पर्ष, अरूप, अरस, अगंध पंची से अन्तर्शब्द, अन्तस्पर्श, अन्तर्-रूप, अन्तर्-रस अन्तर्गन्ध हो अपदार्थ (अ+पदार्थ = अतिशक्ति पदार्थ, अपद + अर्थ = पद रहित शुद्ध अर्थ-चित्ति) से गुजरता नित्यम्, अव्ययम्, अनादि, शून्य अस्तित्व सीमा रेखा अस्तित्वित आत्म हो हो जाता है। यह अति आत्म पूर्णता का प्रवेशद्वार है.. 'इलसपद' है। इलसपद 'समिध्यस' पद है। अमृत ओढ़ना, अमृत बिछाना, अमृत जीना अमृत पीना है। स्वस्थ (स्व-अस्ति) का सर्वोच्च रूप है।

इस पथ के रास्ते में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक बीमारियों के कंकड़-पत्थर प्रारम्भिक साधना की एकी चिकित्सा रूप में स्वयं ही पथ बाहर होते चले जाते हैं।

आत्मा ब्रह्म युजित है। इसके पास चित्ति अर्थ स्तर पर अपदार्थ है। यह अपदार्थ (विज्ञान की भाषा में इसका नाम आधा अधूरा एण्टी मैटर है) आत्मा की वह चैतन्यान व्यवहार शक्ति है जिसका उपयोग कम ताप आण्विक भट्टी (६८° फै.ताप) इस शरीर को चलायमान गतिमान

रखने में आत्मा करता है। इस चैतन्य व्यवहार शक्ति के उपयोग में विक्षेप मात्र, विचलन मात्र, क्षतिमात्र ही बीमारियां हैं जो विभिन्न लक्षण रूप विभिन्न स्तर उत्पन्न होते हैं। भ्रूण केन्द्र से उद्भूत वह अनाहत आधार केन्द्र है इस तन में जहां अपदार्थ से पदार्थ संसर्ग अति सूक्ष्म स्तर अतिसुमापित (मात्र बुद्धि भौतिक तुला मापित) रूप में प्रयुक्त हो जीवन की अजस्रधारा के सहस्रधारा के रूप में सतत प्रवाहित होता है। और इसी धारा से रक्ताणु विकसित, मिश्रित, संमिश्रित होते हैं। इस अपदार्थ के शक्तिकृत, तन्तुकरण संयमित, सुविकसित करने की साधना है एकी साधना तथा इसके भौतिकी उपयोग एकी चिकित्सा। विश्व की सारी चिकित्सा प्रणालियां अगर एकी में सहयोगात्मक हैं तो सार्थक हैं, अन्यथा निरर्थक हैं।

शरीर अति कम ताप आण्विक भट्ठि है। ६४.४° फैरनहाइट ताप भट्ठी। यह भट्ठी चैतन्यान जो प्रोटान ग्रेविटान से भी अतिसूक्ष्म रश्मियां हैं द्वारा शरीर में शक्ति वितरण से चलती है। कोशिका झिल्ली की पारदर्शी असंतुलित झिल्ली को दीवारों के मध्य के अद्भुत असंख्य कारखानों के शक्ति ग्रहण उत्सर्जन का खेल है शरीर। ये कारखाने भी बनते बिगड़ते हैं। नष्ट कारखानों को जल गागर, वायु सागर निष्कासित करता है। ताप के अतिरिक्त इस शरीर में और भी कई–कई सम व्यवस्थाएं हैं, स्थैर्य और संतुलन व्यवस्थाएं हैं। गंधन, चक्षुन, श्रवणन, रसन, इन व्यवस्थाओं के काम करने के भी सौम्य मापन हैं। जिनके एकक गंधांक, लक्स, डेसिबल, स्वादांक, है। लक्स चक्षुन एकक हैं, डेसिबल श्रवणन एकक है तथा स्वादांक, गंधांक स्पर्शांक ढूंडे जा रहे हैं। इन पांचों की सम व्यवस्थाओं से कम विक्षेपावस्थाएं जीना मानव की देवताओं की व्यवस्था स्वस्थ रखता है तथा मानव बीमारी रहित रहता है। प्राकृतिक विक्षेप इतने क्रमशः होते हैं कि बदन उनका सहसा अहसास नहीं करता अतः वे नुकसानदेह नहीं होते हैं। इन्हें सहज सहन करना तप है।

शरीर की आदर्श स्वस्थ अवस्था समस्त पांचों की स्वस्थ देवता व्यवस्था है। यह व्यवस्था १५–२५ डेसिबल आवाज, ६८.४° फॅरनहाइट तापक्रम, १५–२५ लक्स प्रकाश, १५–२५ गंधांक गंध (होम गंध), १५–२५ स्वादांक (कंद मूल दुग्ध खाद्य) के संमिश्र से उत्पन्न होता है।

इस तक पहुंचने का पथ है पंच–एकी–साधना तथा अन्तर्शब्दन, अन्तर्ज्योतन, अन्तर्स्पर्शन, अन्तर्रसन, अन्तर्गन्धन अलग–अलग तथा संयुक्त रूपों से स्वयं स्वयं को पवित्रतम कर लेना।

एकी चिकित्सा का आधारतथ्य यह है कि एकत्वधारणा, पूर्णत्वधारणा, अति–आत्मधारणा, दिव्यधारणा, पवित्रधारणा, आनन्दधारणा या स्व के ब्रह्मविलय की धारणा सूक्ष्म गहनतम सौम्यतम धारणा है। इस धारणा के अस्तित्व में प्रवहण से क्रमशः अर्थभाव, बुद्धि, मन, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, तन, तन कार्य पथ स्तर पर परिवर्तित होते हैं जो स्वास्थ्यकर है। तन तथा इन्द्रिय, मन स्तर आण्विक संरचना परिवर्तन होते हैं जो हमें आनन्दकर, सुखद, शान्तिदायक एवं

स्वास्थ्यकर होते हैं। सतत साधना से इन सकारात्मक परिवर्तनों का क्रमशः सुसंचयन अस्तित्व में बढ़ता जाता है। कालांतर में अस्तित्व में एक आनन्द तथा सुखम् का सर्वप्रकम्पनीय स्वरूप विकसित हो जाता है। इसका अनाहत से सम्बन्ध होता है। इससे अनाहत तथा अनाहत से यह उत्तरोत्तर प्रभावित होते हैं और मानव "स्व-स्थ" की स्वस्थ अवस्था प्राप्त करता है।

उपरोक्त अवधारणा कोई कपोलकल्पना नहीं है। इस धारणा के जिस अर्धसीमा तक विज्ञान पहुंचा है, उस सीमा तक का प्रमाण भौतिकी रूप से उपलब्ध है।

शरीर एक अतिकमताप आण्विक भट्टी है जो सावयवी है। हमारा अस्तित्व भी परमात्म, आत्म, अर्थ, बुद्धि, मन, इन्द्रिय, तन का सावयव है। भौतिक खोजों के अनुसार भौतिक तन कई-कई सूक्ष्म स्थल व्यवस्थाओं का सावयव है। ये सारी व्यवस्थाएं रक्त के माध्यम से अनाहत युजित हैं। अनाहत रक्तधारा का मूल स्रोत है।

हमारा अस्तित्व मूल आधार रूप में एक शक्ति ढांचे से निर्मित है। शक्ति कभी भी स्वतन्त्र रूप में निराधार नहीं रह सकती है। इस शक्ति ढांचे का नियन्ता सूक्ष्म से सूक्ष्मतम अस्तित्वित आत्मा है। यह पूरा का पूरा ढांचा विज्ञान की परिभाषा में भी खरा उतरता है।

हर गति का आधार शक्ति है। शक्ति जितनी सूक्ष्मतम होती है उतनी ही प्रभावी तथा दीर्घ होती है। मूल चार शक्तियों में सबसे कमजोर शक्ति होती है गुरुत्वाकर्षण शक्ति। इस शक्ति का मूल कण गुरुत्वान है। इस गुरुत्वान का वैज्ञानिक मापन असंभव है पर अहसास मापन, बुद्धि मापन सम्भव है। इस गुरुत्वान का प्रभाव बड़ा ही शक्तिशाली है और सबको दिखता है। यह गुरुत्वान वह कण है जो अनास्तित्वित-अस्तित्वित भौतिकी है। यह मात्र अस्तित्वित शक्तिरूपी विज्ञान की भाषा में कहा जाता है। विज्ञान इसे "वर्चुअल" कहता है। अद्भुत यह तथ्य है कि धर्म भी सूर्य को "सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिर्वर्चः" तथा "अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः" कहता है। यह वर्चुअल (Virtual) सूक्ष्मतम शक्तिस्वरूपा अरूप (भौतिकी) इतनी शक्तिशाली है कि धरा को सहजतः अप्रयास सूर्य के इर्द-गिर्द गति देती है। यह प्रकृति स्थूल अति स्थूल रूप धर्म की भाषा में है। प्रकृतिशक्ति का सूक्ष्म सलिल रूप जिन कणों अनास्तित्वित अस्तित्वित मात्र तरंग है से बना है उनका नाम "समत्वान" है। इसे विज्ञान 'एकक' कह (Unified field) इसकी ओर गतिशील है इस 'एकक समत्वान' का 'प्रतिएकक' है आत्मा जो इस पर अति प्रबल असंतुलन है या चैतन्यता संतुलन है। इसका प्रभाव "एकक चैतन्यान" है।

मानव एकक चैतन्यान के कारण अतिगुरुत्वान, अतिफोटॉन, अतिचुम्बकान, अतिविद्युतान (इलेक्ट्रॉन बड़ी स्थूल चीज है विद्युतान की तुलना में) है। अतिकमताप आण्विक भट्टी अतिकम विद्युतान, चुम्बकान, फोटॉन, गुरुत्वान भी है। 'अतिचुम्बकान' के कारण आंख पर पट्टी बांध कर दिशा भ्रम किए व्यक्ति किसी स्थान की सही दिशा बता देते हैं। पर उनके सिर पर चुम्बक रख

देने से वे दिग्भ्रमित हो जाते हैं ऐसा इंग्लैण्ड की मेन्चेस्टर विश्वविद्यालय के प्रयोगों में सिद्ध हो चुका है। इन प्रयोगों में विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों को आंखों पर पट्टी बांध बस में घुमावदार रस्तों से अस्सी किलोमीटर ले जाकर विश्वविद्यालय की दिशा पूछने पर यह सिद्ध हुआ था। सिर पर चुम्बकीय प्रभाव (कृत्रिम) पैदा करने पर वे दिशा नहीं बता पाए। क्योंकि कम चुम्बक भट्टी अतिचुम्बक से लड़खड़ा गई। जिस प्रकार कि कम ताप भट्टी अतिताप व्यवस्था से लड़खड़ा जाती है, आहत देवता हो जाती है। शरीर के दिशा देवता चुम्बकाति प्रभाव से आहत हो जाते हैं। कुछ प्रयोगों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि मानव में चुम्बकीय देवता का मूल निवास भृकुटि के पीछे मस्तिष्क भाग में है जहां शवों में (अति रक्ताल्पता मरीज शव छोड़) फेरिक तथा फेरस ऑक्साइड की संघनित मात्रा पाई गई।

तन शत ट्रिलियन कोषिकाओं का गतिशील महासागर है। मस्तिष्क पंचदश ट्रिलियन कोषिकाओं का तथा सहस्त्र ट्रिलियन युजन संवेदन तन्तुओं का फैला जाल है। यह संवेदन तन्तु करण मूल मस्तिष्क की पंचदश ट्रिलियन एवं तन की पच्यासी ट्रिलियन कोषिकाओं से युजित देव, प्रदेव, उपदेवादि व्यवस्था है। यह व्यवस्था रसायन शक्ति युजित है। शक्ति तन्तुकरण सबल है स्थूल पर। इससे परे प्रकम्पन तन्तुकरण है जो शक्ति (प्रायः आयन रूपी) पार सबल है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि अनुवांशिक चिह्नों, संकेतों के कारण तन कोषिकाओं की नियत अवधि है। रक्त कोषिकाएं औसतः १२०–१२५ दिवस जीती हैं। उम्र पश्चात कोषिकाएं मर जाती हैं और नई पैदा हो जाती हैं। इस मामले में मस्तिष्क तथा हृत्पिण्ड कोषिकाएं अपवाद हैं। ये अपेक्षाकृत अनाहत हैं, पर ये भी आहत होती हैं।

मस्तिष्क कोषिकाएं के आहत होने पर तन्तुकरण व्यवस्था आहत कोषिका पार तक व्यापक हो उठती है। प्रकम्पन तन्तुकरण व्यवस्था का उसे आधार रहता है जो शक्ति तन्तुकरण के माध्यम से कार्य करती है। शक्ति तन्तुकरण एवं प्रकम्पन तन्तुकरण व्यवस्था की ओर विज्ञान गति कर रहा है। अभी ये खोजें होना बाकी हैं। मस्तिष्क कोषिका ह्रास की क्षतिपूर्ति संवेदन तन्तु पूर्ति से होती है पर यह मस्तिष्क सक्रिय रखने पर आधारित व्यवस्था है।

"पंच साधना" जिसके चरण अन्तर्स्पर्श, अन्तर्रस, अन्तर्गन्ध, अन्तर्दृश्य, अन्तर्शब्द–अन्तर्अक्षर है इस संवेदन तन्तुकरण, शक्ति तन्तुकरण, प्रकम्पन तन्तुकरण के सशक्त करने की भौतिक, मानसिक, आन्तसिक प्रक्रिया है जो पूरे के पूरे सहस्र ट्रिलियन युजन संवेदन तन्तुओं, पंचदश ट्रिलियन मस्तिष्क कोषिकाओं, पच्यासी ट्रिलियन कोषिकाओं की व्यवस्था को सशक्त करती है।

'एकी चिकित्सा' में 'एकी साधना' द्वारा "श्रोत्रं श्रोत्रम्" सप्त ऋषि उप साधना द्वारा "अन्तर्शब्द" उप साधना द्वारा तथा 'अतिआत्म' साधना द्वारा चुम्बकीय देवता सशक्त करने का व्यवहार विज्ञान समाविष्ट है।

हम पूर्व में बता आए हैं कि भाव (अर्थ) बुद्धि से भी सूक्ष्म है तथा बुद्धि को भी प्रभावित करते हैं। एकी साधना ब्रह्म, आत्म भाव, अमृत भाव, आनन्द भाव सम्पृक्त शुभ ही शुभ साधना है। पाणिनी ने 'शुभ ही शुभ वाक्' प्रस्थापना की थी। एकी साधना शुभ ही शुभ सर्व की प्रस्थापना करती है।

यदि आदमी को "ध्यायतो विषयान" के विचार से हटाकर "ध्यायतो ब्रह्म" कर दिया जाए तो सारा का सारा क्रम उलट जाता है। और मानव क्रमशः 'ब्रह्मध्यान' से 'सूत्रस्य सूत्रम्' से 'ज्ञान' से 'शौर्य' से 'ओज' से 'सुस्मरण' से 'सुबुद्धि' से 'सर्वसुशान्तावस्था' प्राप्त करता है। एकी साधना द्वारा यह सहज सुलभ है। यह एकी साधना का वैज्ञानिक आधार है। चिकित्सा विज्ञान की अधुनातन खोजें तथ्यात्मक रूप से एकी चिकित्सा को इक्कीसवीं सदी का चिकित्सा विज्ञान सिद्ध कर रही है। इन खोजों के सन्दर्भ में एकी चिकित्सा का विहंगावलोकन आवश्यक है।

'एकी साधना' शतप्रतिशत परिशुद्ध पवित्र साधना है। इसलिए यह तन, मन, बुद्धि, अर्थ, आत्म, परमात्म के उच्च स्तरों के आरोह-अवरोह क्रमों में "सकारात्मक परिपुष्टि" के माध्यम से दिव्य परिणाम देती है। मानव संसाधन के स्व-स्वास्थ्य शक्तिकरण, कार्यक्षमता विकास, दिव्यीकरण, शान्तिकरण, स्वस्थीकरण, सकारात्मक सोचयुक्त करने का सरलतम बिना बाह्य उपकरणों की सहायता के न्यूनतम मूल्य तरीका है एकी साधना से उद्भूत एकी चिकित्सा।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

वैचारिक हिजड़े और प्रजातन्त्र

प्रजातन्त्र व्यवस्था के कई सिरमौर व्यक्तियों से यथा निगम अध्यक्षों, मुख्यमन्त्री, शिक्षामन्त्री, वनमन्त्री, सांसदों, जिलाध्यक्षों, एम.एल.ए. आदि-आदि से मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क कई-कई बार हुआ है। आज भी है। बिना खेद स्पष्ट अभिव्यक्त कर रहा हूं कि इन सबमें एक भी "आदमी" मुझे नहीं मिला। मैंने राष्ट्रीय स्तर के कई-कई आयोजनों, सम्मेलनों में भी भाग लिया है। कई सांसदों के सम्पर्क में आया। मुझे तो ये सारे के सारे ही "वैचारिक हिजड़े" ही मिले। मुझे याद है इनमें से कई 'नेता' होने से काफी पूर्व से मेरे परिचित रहे हैं। ये शुरु से "वैचारिक हिजड़े" नहीं थे। इन्हें धीरे-धीरे-धीरे-धीरे प्रजातन्त्र ने अपने कुसिद्धान्तों के सर्जिकल अस्त्रों से ऑपरेशन कर-करके "वैचारिक हिजड़े" बना दिए।

"बांझ वेश्या" (बकौल महात्मा गांधी) से घटिया व्यवस्था "बांझ कुतिया" मैंने सोची थी। पर प्रजातन्त्र व्यवस्था तो व्यक्ति वेशभूषा में "वैचारिक हिजड़ा" व्यवस्था है। तनिक गौर से इन नेताओं को देखिए.. नीचे से ऊपर तक सारे के सारे अटकते-भटकते ताली बजाते, एक दूसरे पर गालियां बकते, ऐयाशी पागल, शासन सिंहासन इर्द-गिर्द घूमते "वैचारिक हिजड़े" हैं। इन सबकी एक साथ हत्या करनी है तो प्रजातन्त्र की हत्या जरूरी है। तो करो न प्रजातन्त्र की हत्या !

(साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

म.दयानन्द निर्दिष्ट कर्मकाण्ड-साधना परक मन्त्रार्थ

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रन्तन्न ऽ आसुव।।१।।

(यजु.अ.३०/मं.३)

१) शुद्ध सविता सम्पूर्ण दुःखम् (दुर्गुणों से) सदा दूर कर, भद्र सुखं चारों दिशाओं प्राप्त हो।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽ आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।

(यजु.अ.१३/मं.४)

२) हिरण्यगर्भ जगतपूर्व से प्रवहणशील जगत का पालन कर्ता एक केवल सदाई है, द्यौ पृथ्वी लोक त्रिकाल धारणीय है जिसे उसकी यथावत भक्ति तथा सेवन है।

य ऽ आत्मदा बलदा यस्य विश्व ऽ उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छाया ऽ मृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।। (यजु.अ.२५/मं.१३)

३) आत्म तथा बल के विज्ञान का दाता, जिसका सुप्रशासन विद्वानों पे है.. शिष्टों नें जिसे स्वीकारा, जीवन में उतारा है, जिसके गुणों को जीना अमृत छाया है, न जीना अछाया मृत्यु है, उसकी यथावत भक्ति तथा सेवन है।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद्राजा जगतो बभूव। य ऽ ईशे ऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।। (यजु.अ.२३/मं.३)

४) चैतन्य तथा जड़ का महत्ता पूर्वक एक ही अधिष्ठाता रहता है, द्वि चतुः पग का सहजतः ईश है, उसकी यथावत भक्ति तथा सेवन है।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो ऽ न्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।

(यजु.अ.३२/मं.६)

५) उग्र द्यौ दृढ़ धरा अभ्युदय अव्याहत आह्लाद धारण करता, पक्षी समूह उड़ानवत तारों ग्रहों का नियमबद्ध विस्तारित कर्ता है जो... उसकी यथावत भक्ति तथा सेवन है।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।

(ऋ.म.१०/सू.१२१/मं.१०)

६) प्रजापति भिन्न इन उन जड़ चेतन से परे समर्थ नहीं उसके यथावत भक्ति सेवन से हम कामना सिद्ध शुद्ध समृद्धि समृद्ध होते हैं।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।। (यजु.अ.३२/मं.१०)

७) ब्रह्म बन्धु पालक विधाता विश्व भुवन स्तर ज्ञाता है जो उसमें अव्याहत गति से आप्त आह्लादित हैं।

अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽ उक्तिं विधेम।।८।।

(यजु.अ.४०/मं.१६)

८) अग्ने ब्रह्म हम सर्व समृद्धि हेतु सहज सरल धर्मपथ चलें सकल प्रज्ञान ज्ञात हमसे दुरित दूर हों ब्रह्म की यथावत भक्ति तथा सेवन है।

आचमन

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।१।।

१. अगाओ अमृत है बिछौना स्वाहा।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।।२।।

२. अगाओ अमृत है ओढ़ना स्वाहा।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।३।। (तैत्ति.आर.प्र.१०/अनु.३२,३५)

३. सत्य, प्रतिष्ठा, समृद्धि त्रय शोभित मुझ में स्वाहा।

अंगस्पर्श

ओं वाङ्म आस्ये ऽस्तु।

१. मुख में वाक् स्थित।

ओं नसोर्मे प्राणो ऽस्तु।

२. नासिका में प्राण शक्ति।

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

३. नेत्रों में दृष्टि शक्ति।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।

४. कानों में श्रवण शक्ति।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।

५. बाहुओं में बल शक्ति।

ओम् ऊर्वोर्म ओजो ऽस्तु।

६. जंघाओं में सहन शक्ति।

ओम् अरिष्टानि मे ऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। (पार.गृ.का.२/क.३/सू.२५)

७. संपूर्ण शरीर तथा अंग हृष्ट पुष्ट।

अग्नि–आधान

ओं भूर्भुवः स्वः।

(गोभिल.गृ.प.१/खं.१/सू.११)

१. अस्तित्वित तुम, अस्तित्व कारण तुम, उत्कर्ष तुम। *(दीप प्रज्जवलन)*

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठे ऽग्निमन्ना दमन्नाद्यायादधे।।

(यजु.अ.३/मं.५)

२. सत चित आनन्द ज्योतिवत ऐश्वर्ययुक्त भूमिवत धारण आश्रय दातृत्वयुक्त मैं देव सेवन समागम संगठन की भूमि आकाश की पृष्ठभूमि में सुपुष्टता कारक अन्न हेतु अन्न पाक अग्नि स्थापन करता हूं।

अग्नि प्रदीपन

ओम् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्चसीदत।। (यजु. १५/५४)

आत्मन् ज्ञान उद्बुद्ध हो, प्रतिजागृत हो, स्त्री पुरुष धर्म अर्थ काम मोक्ष तथा पूर्ण बल ज्ञान सुसंगत हों इस उस समय में योग्यता अनुभव आयु क्रम पद एकत्र हों।

त्रि समिधादान

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे — इदन्न मम।।१।।

(आश्वलायन गृ.सू. १/१०/१२)

(प्रथम) चतुर्वेद उद्बोधक ज्ञानाग्नि प्रदीपन तव स्वरूपता है। प्रदीपन तव महिमा है, आत्म

समिध प्रदीप्त कर सर्वविध उन्नति कर चतुर्वेदी बनूंगा सुआहुति।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।।

इदमग्नये – इदन्न मम।। २।। (यजु.३/१)

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम।। ३।। (यजु.३/२)

(द्वितीय) सुप्रदीप्त परिशुद्ध चतुर्वेद उद्‌बोधक ब्रह्म हेतु परिष्कृत अर्थ कर्म सुआहूत स्वाहा।

तं त्वा समिद्‌भिरङ्‌गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नये ऽङ्‌गिरसे – इदन्न मम।। ४।।

(यजु.३/३.)

(तृतीय) अगतित गतिदाता अव्यक्त अभिव्यक्त कर्ता अन्तस प्रकाशित कर हम तक ज्ञान विस्तारे सुआहुति। सूक्ष्मतम व्यापकतम हेतु सुप्रदीप्तता-न कि मेरे लिए।

पंच घृताहुतियां

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम।। १।।

(आश्वलायन गृ.सू. १/१०/१२)

चतुर्वेद उद्‌बोधक ज्ञानाग्नि प्रदीपन तव स्वरूपता है। प्रदीपन तव महिमा है, आत्म समिध प्रदीप्त कर सर्वविध उन्नति कर चतुर्वेदी बनूंगा सुआहुति।

जल प्रोक्षण

ओम् अदिते ऽनुमन्यस्व।। १।।

(पूर्व में) अखण्ड एकरस निर्विकार नित्य अविनाशी हमें तेरी अनुकूलता।

ओम् अनुमते ऽनुमन्यस्व।। २।।

(पश्चिम में) ऋत तथा शृत नियामक हमें तेरी अनुकूलता।

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। ३।।

(गोभि.गृ.सू.१/३/१–३)

(उत्तर में) प्रशस्त ज्ञान शालीन सदा हमें तेरी अनुकूलता।

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। ४।। (यजु.अ.३०/मं.१)

(चारों ओर) स्व महिमा दिव्य स्वरूप सविता यज्ञ सु सम्पन्न करा। सर्व ऐश्वर्य यज्ञपति में सु उत्पन्न कर। शुद्ध गुण कर्म स्वभावों में उत्तम सूक्ष्म अव्यक्त धारण कर्ता प्रज्ञान धन विज्ञान को सुसंस्कृत करे.. वेद जनक वाणी को स्वादिष्ट = अपरा करे।

आघारावाज्य भागाहुति

ओम् अग्नये स्वाहा।

इदमग्नये – इदन्न मम।। १।।

(उत्तर) ब्रह्म को सुआहुति। ब्रह्म हेतु-न कि मेरे लिए।

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय – इदन्न मम।। २।। (गो.गृ.प्र.१/खं.८/सू.५)

(दक्षिण) सर्वजनक को सुआहुति। ब्रह्म हेतु-न कि मेरे लिए।

आज्य आहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये – इदन्न मम।। ३।।

(यजु.२२/३२)

(मध्य में) प्रजापालक को सुआहुति। ब्रह्म हेतु–न कि मेरे लिए।

ओम् इन्द्राय स्वाहा।
इदमिन्द्राय – इदन्न मम।। ४।।

(यजु.२२/२७)

(मध्य में) ऐश्वर्य शाली को सुआहुति। ब्रह्म हेतु–न कि मेरे लिए।

प्रधान या मुख्य होम *(प्रातः)*

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।।

१) अन्तर्यामी है सूर्य ज्योतिवत प्रातः सुआहुति।

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। २।।

२) सर्व गतिदायक है कांतिवत कांतिदायक है अन्न सुआहुति।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। ३।।

३) सर्व नेत्र ज्योति है सर्व व्यापक सुआहुति।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।४।।

(यजु. ३/९, १०)

४) ब्रह्म यंत्रित सरात्रि ज्योति रहे सदा सुआहुति।

(सायं)

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।१।।

१) अन्तर्यामी है अग्नि ज्योतिवत सुआहुति।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। २।।

२) ब्रह्म है कांतिवत कांतिदायक अन्न है सुआहुति।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। ३।।

३) सर्वनेत्र ज्योति है सर्वव्यापक सुआहुति।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्रयेन्द्रवत्या। जुषाणो ऽ अग्निर्वेतु स्वाहा।। ४।।

(यजु.३/मं.९, १०)

४) ब्रह्म यंत्रित सरात्रि ज्योति रहे सदा सुआहुति।

(प्रातः सायं)

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय – इदन्न मम।।१।।

१) श्वास पर ब्रह्म अग्नि प्रभाव स्वास्थ्यमय सुआहुति। ब्रह्म अग्नि हेतु–न मेरे लिए।

ओं भुवर्वायवे ऽ पानाय स्वाहा।
इदं वायवे ऽ पानाय – इदन्न मम ।। २।।

२) अति प्रश्वास पर ब्रह्म पवन प्रभाव स्वास्थ्यमय सुआहुति। ब्रह्म पवन हेतु–न मेरे लिए।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
इदमादित्याय व्यानाय – इदन्न मम।। ३।।

(गोभिगृह्यसूत्र०प्र.१/खं.३/यू. १–३)

३) शरीरस्थ वायु पर ब्रह्म सूर्य प्रभाव स्वास्थ्यमय सुआहुति। ब्रह्म पवन हेतु–न मेरे लिए।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवायवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवायवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।४।। (तैत्ति.आर.प्र.१०/अनु.२)

४) श्वास अति प्रश्वास शरीरस्थ वायु पर ब्रह्म अग्नि ब्रह्म पवन ब्रह्म रवि सुप्रभाव सुआहुति। अग्नि पवन रवि प्राण अपान व्यान हेतु–न मेरे लिए।

ओम् आपो ज्योतीरसो ऽ मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।५।। (तैत्ति.आ.प्र.१०/अनु.१५)

५) सर्व प्रवाहित ज्योति जग बीज अमृत महान सर्वाधार सर्वव्यापक सुखस्वरूप है ब्रह्म सुआहुति।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधया ऽ ग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। ६।। (यजु.३२/१४)

६) अति विद्वान पितरवत हम विद्वान बनें सब

सुआहुति।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रन्तन्न ऽ आसुव स्वाहा।। ७।।

(यजु.३०/३)

७) शुद्ध सविता सम्पूर्ण दुःखम् सदा दूर कर भद्र सुख चारों दिशाओं सदा प्राप्त हो।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम स्वाहा।। ८।।

(यजु.४०/१६)

८) अग्ने ब्रह्म हम सर्व समृद्धि हेतु सहज सरल धर्म पथ चलें सकल प्रज्ञान ज्ञात हमसे दुरित दूर हों। ब्रह्म की यथावत भक्ति तथा सेवन है।

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (यजु.३६/३)

६) सुआधार, सुव्यापक, सुखस्वरूप, ज्योतिनिर्मल के धारणीय तेज ओतःप्रोत हम बुद्धि कर्म सुबढ़े।

अग्नि व्याहृति आहुति

ओं भूरग्नये स्वाहा।

इदमग्नये–इदन्न मम।। १।।

१) प्राण है तू तेरे लिए सुआहुति। नहीं है आहुति मेरे लिए।

ओं भुवर्वायवे स्वाहा।

इदं वायवे–इदन्न मम ।। २।।

२) दुःखहर्ता है तू वायु तेरे लिए सुआहुति। नहीं है आहुति मेरे लिए।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा।

इदमादित्याय–इदन्न मम।। ३।।

३) सुख स्वरूप है तू सूर्य तेरे लिए सुआहुति। नहीं है आहुति मेरे लिए।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवायवादित्येभ्यः स्वाहा।

इदमग्निवायवादित्येभ्यः –इदन्न मम।। ४।।

४) प्राणदाता दुःखविनाशक सुख स्वरूप है तू अग्नि वायु सूर्य के लिए ये सुआहुतियां। नहीं हैं आहुतियां मेरे लिए।

स्विष्टकृत् आहुति

ओं यदस्य कर्मणो ऽ त्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।

इदमग्नये स्विष्टकृते–इदन्न मम।। ५।।

(आश्व.१/१०/२२)

अल्पज्ञ कर्मों का नियन्ता वह ब्रह्म न्याय उत्तम मध्यम अधम फल दे सुमनोरथ सिद्धि हेतु सुदानदाता प्रायश्चित्त विधाता आप्तकाम ज्ञान हेतु सर्वकाम सिद्ध हो सुआहुति। कर्माहुति है ब्रह्म हेतु-न मेरे लिए।

मौन प्रजापति आहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये–इदन्न मम।। ४।।

प्रजापालक हेतु सुआहुति। प्रजापालक हेतु-न मेरे लिए।

पावमानी आहुतियां

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।

आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।।१।।

(ऋ.९/६६/१९)

१) सत चित आनन्द आयु पवित्र करता ब्रह्म अन्न बल प्रदान कर दुर्विचार हर सुआहुति। पवित्र ब्रह्म हेतु-न मेरे लिए।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः।
तमीमहे महागयं स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।।२।।

(ऋ.९/६६/२०)

२) पंच समूह शुभ नियोजक पुरोहित अग्नि ऋषि तथा पवित्र कर्ता है उसे हम प्राप्त करते हैं सुआहुति। पवित्र ब्रह्म हेतु-न मेरे लिए।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।।३।।

(ऋ.९/६६/२१)

३) सत चित आनन्द मुझमें पवित्रता ब्रह्मतेज ऐश्वर्य सुपुष्टि शोभन कर्मयुक्त गुणधारण से हो सुआहुति। पवित्र ब्रह्म हेतु-न मेरे लिए।

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।।४।।

(ऋ.१०/१२१/१०)

४) सत चित आनन्द जड़ चेतन अधिपति यज्ञ सुभावना सिद्ध त्रि ऐश्वर्य पाएं सुआहुति। पवित्र ब्रह्म हेतु-न कि मेरे लिए।

अष्टाज्याहुतियां

ओं त्वं नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळो ऽ व यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम।।१।।

(ऋ.४/१/४)

१) ज्योतिब्रह्म सर्वज्ञ अतियज्ञ अतिप्राप्त अतितेजस्वी पवित्र है। न्यायकारी के अनादर, सर्वद्वेष हमसे दूर कर सुआहुति। ज्योति न्याय हेतु-न कि मेरे लिए।

ओं स त्वं नो ऽ अग्ने ऽ वमो भवोती नेदिष्ठो ऽ अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम।।२।।

(ऋ.४/१/५)

२) ज्योति ब्रह्म समीप रक्षण हमारे उषा विशिष्ट अति समीप हो। न्यायी प्रदत्त हमारी अश्रेष्ठता नष्ट हो। तटस्थ ज्ञान प्रकाशित हमें सुपदार्थ हों प्राप्त सुआहुति। ज्योति न्याय हेतु-न मेरे लिए।

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। इदं वरुणाय–इदन्न मम।।३।। (ऋ.१/२५/१९)

३) न्यायी ब्रह्म मेरी अर्चना सुन तटस्थता सुख पाऊं, गुण आवरणित तेरी सटीक अर्चना कर रहा सुआहुति। न्याय हेतु-न मेरे लिए।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा

शास्ते यजमानो हविर्भि:। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयु: प्र मोषी: स्वाहा।। इदं वरुणाय–इदन्न मम।।४।।

(ऋ.१/२४/११)

४) न्यायी ब्रह्म यज्ञमय चाहे जिसे वह आयु दे मुझे ब्रह्म मन्त्रों से यह अर्चना है अन्तस स्वर प्रशंसित वरणीय इड़ समर्पण स्वीकार इसी जन्म बोध दे। शतायु शताधिक आयु बनूं मैं तव कृपा से सुआहुति। न्याय हेतु-न मेरे लिए।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्त:। तेभिर्नो ऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्य: –इदन्न मम।।५।।

(कात्या.श्रौत.२५/१/११)

५) न्यायी ब्रह्म तेरे शत सहस्र महान यज्ञ से उत्पन्न फैले पाश पालनीय व्यापक तुझ धारण से सूक्ष्म देवयुजन से टूट गिरें सुआहुति। न्याय पालन प्रेरण व्याप्ति गति सूक्ष्मता हेतु-न मेरे लिए।

ओं अयाश्चाग्ने ऽ स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज॰ स्वाहा।। इदमग्नये अयसे–इदन्न मम।।६।।

(कात्या.श्रौत.१/५)

६) ज्योति ब्रह्म परा व्यक्ति अनुकम्पनीय सर्वत्रीय यज्ञ वहन कर्ता स्व स्वास्थ्य संस्थान सशक्त हो तुझसे मेरा सुआहुति। सर्वज्ञ इस उस हेतु-न मेरे लिए।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाया ऽऽ दित्याया ऽ दितये च–इदन्न मम।।७।। (ऋ.१/२४/१५)

७) न्यायी ब्रह्म उत्तम मध्यम अधम अर्थात् पश्यन्ती मध्यमा वैखरी वाक् व्यक्तित्व टूट ढह जाए अखण्ड व्रत चले अपरा पवित्र हो सुआहुति। न्याय ज्योति अव्यक्त हेतु-न मेरे लिए।

ओं भवतन्न: समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञ॰ हि॰ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य न: स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम्–इदन्न मम।।७।।(यजु.५/३)

८ अपरा पवित्र हम दो एक विचार सत चयनादि पुण्य आभर हों ऋत शृत शाश्वत हो हम कल्याणतम आनन्दतम आज अब हर पल हों सुआहुति। ज्ञान आगार हेतु-न मेरे लिए।

ओं सर्वं वै पूर्ण॰ स्वाहा।।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

बजट-खुरचन और प्रजातन्त्री चूहे

पैसा आदमी के लिए है। आदमी जो पैसे के लिए रह गया है बड़ा दयनीय है। विश्व के सारे राष्ट्र आज पैसे से छोटे हैं। इन्हें दयनीय किया है 'बजट' नामक मूर्खताओं की सीमाओं ने। बजट पैसे के अनाज को मन्त्री, सांसद चूहे खुरच-खुरच कर खाते हैं और खुरचन खाए घूस हो जाते हैं।

(साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

आत्मा का विज्ञान

विज्ञान भौतिकी विधि है आत्मा अभौतिकी है। अभौतिकी का विज्ञान तनिक अजीब सी बात है। यह भी अजीब सी बात है कि अभौतिकी आत्मा अपने सारे कार्य भौतिकी उपकरणों के माध्यम से ही करती है। अतः आत्मा के सारे सम्बन्ध भौतिकी ही हैं। इन सम्बन्धों के आधार पर आत्मा की खोज या पहचान आत्मा का विज्ञान है।

विज्ञान शब्द विषय वस्तु में नहीं पद्धति में निहित है। "वैज्ञानिक विधि" जिस विषय पर लागू करके उसकी खोज तथा निष्कर्ष निकाले जाते हैं वह उस विषय का विज्ञान है। आत्मा के विज्ञान को समझने के लिए दो चरणों की आवश्यकता है। प्रथम चरण में आत्मा का भौतिकी अहसास तत्त्व और दूसरा आत्मा की अनुभूत्यात्मक पहचान। आत्मा का भौतिकी अहसास विज्ञान के जटिलतम सूक्ष्मतम उपकरणों के प्रयोगों के निष्कर्षों से हो सकता है।

आत्मा के अहसास पूर्व का प्रश्न है आत्मा का स्थान.. शरीर में आत्मा का स्थान कहां है? शत शत संस्कृति प्रश्न है यह? उत्तर जितना सरल है उससे अधिक कठिन है। क्या विज्ञान के पास इस प्रश्न का उत्तर है? विज्ञान की इस विषय में खोजबीन की हम खोजबीन हम करें–

एल.ई.जे.ब्रौवेर (Brouwer) ने १९२४ में एक सिद्धान्त दिया है जिसका नाम है–Intuitionism उस सिद्धान्त का सार है "मध्यपार का अस्वीकार नियम" (Rejection of the law of the excluded middle) इस सिद्धान्त का आधार तथ्य है वक्तव्य के नकार का अस्वीकार उसका स्वीकार है। यह सिद्धान्त गणित दर्शन का है। पर एक ब्रह्म सूत्र में इसका सटीक प्रयोग किया गया है। "इक्षतेनाशब्दम्" में ईक्षण नहीं होने से अशब्द हो जाते हैं का सीधा अर्थ है ईक्षण सीमा में ही शब्द होते हैं। आंख को किससे देख के बताओगे कि यह आंख है? आत्मा को अरे किससे अहसास कर बताओगे कि यह आत्मा है? आत्मा की ईक्षण सीमा क्या आत्मा हो सकती है? क्या यहां ईक्षण से शब्द सिद्ध हो सकता है? सहस्र संस्कृति प्रश्न है यह? उत्तर प्रतीक्षा चाहता है।

प्रश्न कहां उठते हैं? उत्तर कहां मिलते हैं? मूल गतिआधार क्या है? वर्तमान विज्ञान का उत्तर है मस्तिष्क में। क्या मस्तिष्क में आत्मा है? यदि है तो कहां आइए ढूंढ़े।

मस्तिष्क संरचना इन भागों से बनी है। (१) (Frontal), (२) (Temporal), (३) (Retina), (४) (Parital), (५) (Occipital), (६) (Spinal Cord), (७) (Visual Cortex), (८) अणुमस्तिष्क (Cerebellum), (९) (Corpus callosum), (१०) (Thalamus), (११) (Hypothalamus upper brain stem), (१२) (Hypo Campus), (१३) (Cpons recticular formation), (१४) (Medulla recticular formation)।

हर कोषिका मरती जीती है.. मस्तिष्क तथा हृदय कोषिकाएं मूलतः निर्मित होने पर मरती मरती हैं जीती नहीं। स्थाई उम्राधार हैं मस्तिष्क कोषिकाएं या हृदय कोषिकाएं। हृदय क्षेत्र क्या आत्मा का शब्द ढूंढा जा सकता है? कोटि जीवन क्रमों का प्रश्न है यह? स्व-स्वास्थीकरण प्रक्रिया से मानव ने कुछ पक्षियों, पशुओं में वह केन्द्र ढूंढा जा चुका है जहां से अजस्र रक्तधार की मूल उत्पत्ति होती है। पशु पक्षियों में यह रीढ़ की हड्डी में मूलाधार तथा उससे ऊपर के स्थानों में रहता है। मनुष्य के स्व स्वास्थ्य का आधार है यह केन्द्र। मनुष्य में यह ढूंढा नहीं जा सका है। यह केन्द्र भौतिकी अनाहत केन्द्र है।

कोषिकाओं की ताउम्र जीने की संकल्पनानुसार मानव की आत्मा या तो हृदय में होनी चाहिए या मस्तिष्क में। मस्तिष्क में होने की खोज जो ऊपर दी जा चुकी है (कृपया शीघ्र प्रकाश्य 'एकी चिकित्सा' पढ़े) निरर्थ ठहर चुकी है अतः इसे हृदय में ही होना चााहिए। कुछ सरल से अतिआत्म साधना तर्क इस प्रकार हैं-

१.आह्लाद की उछागता का अहसास बिन्दु है अनाहत। गद्‌गद् अवस्था का अहसास हृदय में होता है। २.काम का परम आह्लाद परितृप्ति सुख हृदय के करीब अनाहत केन्द्र पर ही अहसासित होता है। ३.अनाहत केन्द्र, स्व-स्वास्थ्य संस्थान से युजित है। स्व-स्वास्थ्य संस्थान सकारात्मकता से जुड़ा है.. इस अवस्था अनाहत केन्द्र हृदय स्थानीय पर सर्वाधिक गहन आह्लाद होता है। ४.आत्मा-परमात्मा का मिलन स्थल 'अक्षर ब्रह्म' स्थल है। 'शब्द ब्रह्म' शरीर में अपरा स्थल उद्‌भूत होता है। सारी शब्दमाला का आधार अक्षर है 'अ'। 'अ' का उद्‌गम स्थल अनाहत केन्द्र हृदय में ही है। चिकित्सा विज्ञान जब 'वाक्' केन्द्र मस्तिष्क में आत्मा ढूंढ रहा था तो वह दिशा सही थी पर गति अधूरी थी। "अपरा, परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी, अभिव्यक्ता अव्यक्ता" वाक् स्तरों में वह मस्तिष्क केन्द्र पश्यन्ती- मध्यमा स्तर की बात है। ५.'प्राणवायु'- 'ओष' जीवन का सशक्ततम आधार है। जीवन की सबसे महान घटना 'पहली सांस' है। पहली सांस ओष संयुक्ति फेफड़ों में होती है.. और पहली भ्रूण रक्त कोषिका जिसमें सर्वाधिक ओष पिपासा तथा ग्रहण क्षमता होती है अनाहत केन्द्र के निकटतम ही ओषजन से ओष ले रक्तिम होती है। अतः आत्मा को इसके निकटतम ही होना चााहिए। ६.प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान में उदान वायु आत्म प्रिय तथा समस्त वायुओं का आधार होती है। उदान वायु का प्रथम ग्रहण एवं अन्त्य निष्कासन फेफड़ों से ही होता है। अतः आत्मा को फेफड़ों में ही होना चाहिए। ७.हिचकी तथा छींक वे विक्षेप हैं जो सीधे स्व-स्वास्थ्य संस्थान से जुड़े हैं। छींक में शरीर की सर्वाधिक व्यवस्थाएं कार्य करती हैं। छींक का उद्‌गम स्थल हृदय के निकट ही है अतः आत्मा को हृदय के निकट ही होना चााहिए। ८.गुरुत्व रक्त अभिसंचरण नियम से शरीर के हर अंग का समुचित पोषण हृदय से ही होता है.. हृदय को सर्वाधिक सशक्त रखने के लिए आत्मा का इसके निकट स्थानी

होना जरूरी है। ९.हृदय बदस्तूर चलता रहता है सतत कर्मशील है, सम कर्मशील है। कर्म आत्मा का सहज गुण है अतः आत्मा का स्थान यहीं होना चााहिए। १०.सहजतः भी बच्चों का हाथ "तुम कहां हो?" पूछने पर हृदय पर ही जाता है। ११."द्वि–मस्तिष्कों" का युजन स्थल इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है कि वह स्थल निकाल देने पर मानव का स्व जैवत्व संतुलन- निर्णय क्षमता अति कम हो जाती है। यह केन्द्र मस्तिष्क से भी अधिक महत्वपूर्ण है। १२.अति तीव्र दर्द की अनुभूति मस्तिष्क को नहीं हृदय को काटती है। अतः हृदय ही आत्मा का स्थल हो सकता है। १३.प्रज्ञा ढ़ांचा है मस्तिष्क का.. तरंगायित स्वरूप जिसकी कोषिकाएं अमर हैं जीवन भर। ऋतमय होती है प्रज्ञा, शृतमय होती है मेधा। प्रकृति नियम युक्त है प्रज्ञा, नैतिक नियम युक्त है मेधा। मेधा की स्थिति गहन अर्थ है अतः आत्मा का स्थान मेधा के निकट होना चाहिए, हृदय में होना चाहिए। १४.साधना में स्थान आत्मा का होना चाहिए। 'मस्तिष्क स्थानीय', 'न स्थानीय' तथा 'हृदय स्थानीय' होती हैं साधनाएं। मस्तिष्क स्थानीय साधनाएं तनाव पैदा करती हैं, न स्थानीय साधनाएं तनाव मुक्ति पैदा करती हैं तथा हृदय स्थानीय साधनाएं आनन्द आह्लाद पैदा करती हैं। स्पष्ट है आत्मा का स्थान हृदय अन्तस् में ही होना चाहिए। १५.सदियां प्रवहणित भारतीय धर्म वेद, उपनिषद, दर्शन, गीता आदि में गुहा हृदय मेधा में ही आत्मा का अस्तित्व परमात्मा मिलन स्थल माना सिद्ध किया गया है। इस प्रकार वर्तमान तथ्यों के आधार पर, वैज्ञानिकता के आधार पर, धर्म के आधार पर, साधनाओं के आधार पर, अति आह्लाद अति दर्द के आधार पर आत्मा का अस्तित्व हृत प्रदेश में ही सिद्ध होता है।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

अपने सारे के सारे रास्ते मैंने खुद बनाए हैं।
अपना मसीहा अपना चेला आप हो गया हूं मैं।। *(साभार आप्ता)*

(पृष्ठ २६ का शेष...सर्व धर्म समभाव प्रार्थना)

वेद कहता है-

यो विद्यात् सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः इमाः प्रजाः।
सूत्रस्य सूत्रं स विद्यात् स विद्यात् ब्राह्मणं महत्।। १९।।

प्रजाओं में पिरोए सूत्र के सूत्र को जो जानता है, वह ब्रह्म महत् को जानता है। यह अविरल बहती सर्व-धर्म-समभाव धारा है जो अक्षर (अ-क्षर = नष्ट नहीं) है अक्षर (अक्ष-र) आंखों के माध्यम से मनुष्य जीवन में रमणीय उतरनी है, विश्व को सुखद रमणीय कर दे सकती है। इसे प्रार्थना माध्यम से विद्यालयों में रोप कर विश्व सुखद किया जा सकता है।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

"अति आण्विक भट्टी यह शरीर"

शरीर दस खरब कोशिकाओं से निर्मित अति आण्विक भट्टी है। इस भट्टी में दस खरब रासायनिक कारखाने एक-एक पारदर्शी झिल्ली में सतत अविश्राम कार्यरत हैं। सारा का सारा शरीर एक अति आण्विक भट्टी विद्युतीय व्यवस्था का खेल है। हर कोषिका की झिल्ली कारखानों का कारखाना है। इस झिल्ली जो कि आयानों को पारदर्शी है के आर-पार विभिन्न दुर्लभ अधातुओं के आयनों की लचीली असंतुलित अवस्था होती है। यह असंतुलन मनुष्य के मन, बुद्धि की स्थितियों के अनुरूप घटता बढ़ता है। इसका बढ़ना जीवन की ओर गति है तथा इसका घटना मृत्यु की ओर गति है।

इस अति आण्विक भट्टी में मूल तत्त्वों का परिवर्तन भी होता है। कोबाल्ट निर्माण का तत्त्व इस सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण है कि इसके असंतुलन से रक्ताणुओं की उम्र कम हो जाती है। इस भट्टी में इलेक्टॉन् स्तरीय आयन विभिन्न अन्तर्सम्बन्धित खेल खेलते हैं। इलेक्ट्रॉन् से छोटे स्तर धलेक्ट्रॉन या क्वॉर्क स्तरीय खेल इन्सान को मालूम नहीं है। फिर भी इन्सान रक्त संरचना, शुक्राणु-रजाणु संरचना, जीन संरचना, कुछ एन्जाईम संरचना तथा कार्य, आंशिक स्व-स्वास्थ्य संस्थान आदि में कैसे कार्य होता है यह जानता है। इन्सान यह नहीं जानता कि ये कार्य क्यों होते हैं। इन्सान इस चलती मशीन के गुण तथा संरचना का कैसे? क्या? कहाँ? तत्त्व जानता है। पर क्यों तत्त्व से अनजान है। सच्चा खेल क्यों तत्त्व है। आखिर यह आण्विक भट्टी है क्यों?

परिवर्तन प्रबन्धन सर्वाधिक कठिन प्रबन्धन है। अति आण्विक भट्टी यह शरीर परिवर्तनों का महासागर है। इसमें प्रतिपल असंख्य परिवर्तन होते हैं। ये सारे परिवर्तन प्रवहणशील हैं। काल दृष्टि से एक नदीवत अलौट हैं। शिशु पुनः भ्रूण नहीं हो सकता है। ये परिवर्तन अंश से सर्व होने के साथ-साथ सर्व से अंश भी हैं। चोट दुर्घटना के परिवर्तन अंश से सर्व हैं। परिवर्तन प्रबन्धन में चैतन्य इतना प्रबल है कि इंग्लैण्ड के कारखाना क्षेत्र में धुँए कोयले के प्रभाव से सफेद पक्षी स्याह पक्षी में आण्विक स्तर जीन स्तर पर परिवर्तित हो गया और जीवित है। सर्व से अंश परिवर्तन के कई उदाहरण विश्व में हैं। जहाँ अदम्य संकल्प शक्ति से भीषण दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति जिसे डॉक्टरों ने दौड़ने के नाकाबिल घोषित किया था विश्व चैम्पियन धावक बना तथा कई व्यक्तियों ने कैंसरों, बीमारियों को सहजतः मात दी। स्पष्ट है परिवर्तनों में अपरिवर्तनीय महत्त्वपूर्ण है।

शरीर में चार मूल शक्तियाँ हैं। ये हैं चुम्बक, विद्युत्, प्रकाश एवं गुरुत्व। गुरुत्व शक्ति सबसे सूक्ष्म है। इसके काल्पनिक कणों का नाम ग्रेविटॉन है। प्रकाश के न्यूनतम कणों का नाम फोटान है। फोटान नापा नहीं जा सका है पर अस्तित्वित है। इन चार शक्तियों में एक एकक

शक्ति हैं। चारों शक्तियाँ एकक शक्ति के प्रभाव से एक प्राकृतिक संतुलन में रहती हैं। यह अद्‌भुत् सत्य है कि प्रकाश के आधार में फोटानों के स्फुरण के मध्य के अन्तराल और फोटान अन्तराल में एक शक्ति सम रहती है तथा प्रकाश से सूक्ष्म है। यह शक्ति इंगन ज्ञात है। इसका सम वितान प्रकाश तथा प्रकाश अन्तराल (न प्रकाश) का प्रवाह है। प्रकाश कूप मध्य अन्तराल में इस शक्ति की खोज आवश्यक है।

ये चारों संतुलन एकक शक्ति पदार्थ के बने हैं। पदार्थ शक्ति की उपज ये हैं। पदार्थ से परे अपदार्थ है। अपदार्थ पदार्थ संघात अधिकतम शक्ति देता है। अपदार्थ अभौतिकी दुनियाँ इस भौतिकीय दुनियाँ से अलग है। आत्मा का अस्तित्व अभौतिकीय है। तथा यह अभौतिकीय चैतन्यता चतुःशक्ति भौतिकता पर असंतुलन के रूप में अस्तित्वमान् है। अति अल्प करीब करीब १/ळ–१ (एक बटे अनन्त घटा एक) अंश यह अभौतिकीय अस्तित्व समस्त शारीरिक परिवर्तनों का अपरिवर्तनीय नियन्ता है।

अति आण्विक का अर्थ है आण्विक से भी सूक्ष्म। सूक्ष्मतम मापे कण क्वार्क में अर्ध चक्रिय गति असंतुलन से उसमें स्फुल्लिंग निकलता है। यह स्फुल्लिंग प्रकाश कणिका है। स्पष्ट है क्वार्क में प्रकाश गति है। तथा अन्य शक्तियाँ भी हैं और ये क्वार्क रूप संतुलन में हैं। सामान्य क्वार्कों में नियमबद्ध सन्तुलन है। पर शरीर क्वार्क निःसन्देह असंतुलित है। ये जैवशक्ति असंतुलित है तभी तो ये अभौतिक चालित पूरे शरीर को विभिन्न तरीकों से संतुलन के विरुद्ध चालित करते हैं।

प्रकाश या गुरुत्व या चुम्बकान शक्ति के सम स्तर से उद्‌भूत शक्ति पहले सम स्तर प्रवहण आधार बनाती है। तथा तनिक कालान्तर में इस पर व्यक्त-अव्यक्त (प्रकाश के सन्दर्भ में क्वांटम सिद्धान्त) तरंगे उत्पन्न होती हैं यह भौतिकीय तथ्य है। अभौतिकीय अस्तित्व में अति अल्प अपदार्थ पर आत्म चैतन्य का स्फुरण अर्थ के सूक्ष्म स्तर पर सम स्तर प्रवहण (चतुः शक्ति साम्य पर असंतुलन) उत्पन्न होता है तथा उससे व्यक्त-अव्यक्त तरंगों के रूप में संवेदन उत्पन्न होते हैं। इसे देव व्यवस्था, आत्मदेव संचालित कहा जा सकता है।

देव उपदेव व्यवस्था इस प्रकार है- देव तैंतीस-तैंतीस समूह होते हैं। वाक् दर्शन इसे सशक्त अभिव्यक्त करता है। वाक् के स्तर हैं- अपरा, परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी, अभिव्यक्ता। इतने ही स्तर वाक् देवताओं के हैं। मूल वाक् देवता अपरा स्थल रहते हैं। इन देवताओं को शब्द तथा अक्षरों की थाली में अर्घ्य दिया जाता है और इनसे शब्द तथा अक्षरों की थाली में ही आशीष लिया जाता है। वेद के दिव्य शब्द स-अर्थ विस्तारार्थ इसी अपरा धरातल से आते हैं। तैंतीस देव परा स्थल बीज अव्यक्त रहते हैं। परा स्थल से उपदेव क्षेत्र के बीज भी प्रारम्भ होते हैं। पश्यन्ती स्थल अक्षरों में अर्थ ढलना शुरु होता है। उपदेव क्षेत्र भी स्पष्ट

होते हैं। यह अव्यक्त का धूमिल आकार होता है। मध्यमा स्थल प्राण संसर्ग प्रारम्भ होता है। तथा वैखरी स्थल मुख गुह्वर अन्नमय कोष संघात होता है। वाक् का यह अभिव्यक्तारम्भ स्तर है। इसके पश्चात् संघात बाह्य हो जाता है जो अभिव्यक्ता स्तर है। वाक् के मुख्य तैंतीस देव हैं। जिनके मूलाधार स्वर पांच हैं। इन पांच का आधार एक स्वर है। जिसकी संज्ञा विराट् है। अति अल्प अपदार्थ परे आत्म चैतन्य व्यक्त अव्यक्त का आधार अति आत्म विराट है।

अन्नमयकोष = प्राणमय कोष = मनोमय कोश = विज्ञानमय कोष = मेधामय कोष = प्रज्ञामय कोष = आनन्दमय कोष देवताओं का क्रम अनुक्रम है। इनमें से देवता गुजरते उन्नत, अवनत, सउन्नत आदि होते हैं। अन्नमय कोष विज्ञान को तैंतीस जीन सीढ़ीयों तक ज्ञात है। प्राणमय कोष क्षेत्र में विज्ञान ओषजन, कार्बन द्विओषिदादि के अति स्थूल क्षेत्र तक सीमित है। धर्म विज्ञान अन्नमय कोष प्राणमय कोष अनुगुणित तैंतीस (फैक्टोरियल तैंतीस) तक पहचानता है। मनोमय, विज्ञानमय, मेधामय, प्रज्ञानमय, आनन्दमय त्रिसप्त (ये त्रिसप्ताः) द्वारा अथर्ववेद मननीय है।

अंग = नवद्वार = अष्टचक्र = सप्तऋिषि = पंच कोष = द्वि कोष = हिरण्य कोष = पंचात्म =पंचातिआत्म = त्रिवाक् = ओ३म्। अति आत्म साधना आरोहण तथा अवरोहण शरीर की आण्विक मन्द दहनीत भट्ठी को न्यूनतम सुखम् तक रखने का सहाय है।

डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

हमारे प्रकाशन

१.क्रियात्मक नेतृत्व, २.सकारात्मक नेतृत्व, ३.सांतसा एवं पर्यावरण, ४.अयोध्या विजय सूत्र, ५.परिवार, ६.स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती- एक सानिध्य आशीष भरा, ७. सूत्रस्य सूत्रम् (सतयुग संभव है), ८.आप्ता, ९.प्रथमम्, १०.वैदिक जीवन भारती, ११. अगाओ की किताब बेकुबा, १२.अति-आत्म साधना, १३.बीजवृक्ष, १४.भापा के भजन, १५.मृत्यु, १६.हृदय चिकित्सा, १७.नवं नवम् परिवार प्रबन्धन, १८.अमृता प्रीतम और मेरी कविताएं। १९. परीक्षा में सफलता के सूत्र, २०.गृहणी सफलता के सूत्र, २१. सफल जीवन-साथी सूत्र, २२.अतिसमय प्रबन्धन, २३.त्रैतवाद, २४.संक्षिप्त होम्योपैथी दिग्दर्शिका, २५.घेरों को घेर दो, २६.गहन साक्षर कविताएं, २७.संक्षिप्त होम्योपैथी दिग्दर्शिका, २८.कव्य हव्य अछंदमय, २९. मेघदूतम्-२००६, ३०.दशरूपकम्, ३१. प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति, ३२.स्वयं। **सांतसा विशेषांक :** १.विज्ञान कथा आदमी एवं प्रजतन्त्र संविधान, २.भगवाकरण, ३.भापा की कथाएं, ४.ओम् वेदोऽसीत्-सांगोपांगादि अध्ययन पद्धति। **ध्वनिमुद्रित :** १. भापा के भजन भाग १ से ३, अति आत्म साधना।

"सर्व धर्म समभाव प्रार्थना"

"हम न केवल विश्वव्यापी सहिष्णुता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य मानते हैं।" विवेकानन्द के शिकागो में पहले भाषण का यह अंश सर्व-धर्म-समभाव की आत्मा है। विश्वव्यापी सहिष्णुता वह तत्त्व है जो धर्मों का धर्म है। महात्मा गांधी ने कुरान, बायबल, गीता पढ़ने के बाद मजहबों में समभाव ढूंढने की कोशिश की। **गांधीजी** का **"ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान"** भजन विश्वव्यापी सहिष्णुता की सन्मति की ओर महान् कदम है। इसी कदम में कदम मिलाकर सर्व-धर्म-समभाव प्रार्थना **विनोबा भावे** ने कही- **"ओ३म् तत्सत् नारायण तू..."** इस प्रार्थना में ओ३म्, अहुरमज्द, ईश, पिता, ताओ आदि के गुणों के माध्यम से विश्वव्यापी सहिष्णुता बोने के महत् प्रयास हैं। **महात्मा भगवान दीन** का **"मानवता मन्दिर"** भी इस ओर एक चरण था।

मजहबों में मानवता एक सतत, सहज प्रवहण है। मानवता खुद से शुरु होती है जो स्वयं से खुद को दूसरे के खुद से जोड़ लेता है। वह खुदा के निकट हो जाता है। **'आत्मैवाभूद्विजानतः'** आत्मवत सबको जानना ही **'एकत्वम्'** देखने का रास्ता है। वेद से आज तक यही धारा विश्वव्यापी सहिष्णुता के रूप में सतत प्रवाहित है। **'धर्म'** जगत् मानव ब्रह्म का योजक है। हम आज से प्रारम्भ करके वेद तक इस अविरल बहती धारा को देखें-

मानवता अपनी देवी है।
ज्ञान हमारा भैया है।
मेहनत अपनी बहना है।
धरती मां की गोदी में।
सत्य जीवन साथी संग।
जय विश्व जीते रहना है।।१।।

कवि नीरज कहता है-

क्या करेगा प्यार वह ईमान को।
क्या करेगा प्यार वह भगवान को।
होकर के एक इन्सान जो।
कर न सका प्यार एक इन्सान को।।२।।

गांधी प्रिय भजन-

वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीर पराई जाने रे।
पर दुःखे उपकार करे रे मण अभिमान न आणे रे।

मानव-स्वभाव और प्रजातन्त्र

अश्लील होने की जाहिल काहिल होने की, अवैज्ञानिक होने की, अपरिष्कृत होने की, शराबी होने की, मूर्ख होने की, अन्धविश्वासी होने की कोई भी आदमी अपने घनिष्ठों को भी इजाजत नहीं देता है। क्यों की मानवता को घटिया होने देना नैतिक पतन है। प्रजातन्त्र व्यवस्था इस सबकी इजाजत देती है। मानव सहज स्वभाव के विपरीत है प्रजातन्त्र, अतः इसकी हत्या करना आवश्यक है।

(साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

सकल लोक मां सहुणे रे बन्दे निन्दा करे न केणी रे।
वाछ काछ मन निश्चल राखे धन-धन जननी तेरी रे।। ३।।

वर्तमान में उपरोक्त तीनों पद विश्वव्यापी सहिष्णुता की मानों परिभाषा है।

कम्युनिज्म सार-

एक सब के लिए, सब एक के लिए।। ४।।

तुलसी- राम के मुख जनता को सन्देश-

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।
परहित है जिनके मनमाही।
तिन कह जग कछु दुर्लभ नाही।। ५।।

नानक कहते हैं-

सब मयि रमि रहियो प्रभु एको,
पेखि-पेखि नानक बिगसाई।
अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे।। ६।।

सारे सन्देशों में विश्वव्यापी सहिष्णुता आत्मवत सबको जानो, सबसे व्यवहार करो है।

कुरान की आयत है-

"अफ्ज़लुल इमानि उत् तोहिब्बो लिनन से मा तोहिब्बो व तक्र हो लहुम ले नफसेका"।। ८।।

अर्थात् सबसे अफजल सबसे उम्दा मजहब यह है कि जिसे आप अपने लिए तकलीफ देह समझते हैं, वह व्यवहार किसी के भी प्रति न करें।

बाइबिल में लिखा है-

Do unto others as you would do unto you. This is the whole of the prophet & best of religion.।। ९।।

अर्थात् दूसरों से जैसा व्यवहार तुम चाहते हो वैसा ही व्यवहार उनके साथ करो।

बौद्ध धर्म सार-

अयातुले पयासु। इष्टो यथात्मनः देहः सर्वेषांहि प्राणिनां तथा।
एवं हि ज्ञात्वा सदा दायाकारि सर्व सुधारिणाम्।। ११।।

अर्थात् जिस प्रकार आपकी आत्मा आपको इष्ट है उसी प्रकार सबको सभी की आत्मा इष्ट है ऐसा जानकर सब प्रणियों पर ममत्व रखो।

महाभारत सार– भीष्म द्वारा शरशय्या पर दिया उपदेश–

श्रूयतां धर्मस्य सारं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।
यदिच्छत च आत्मनि तद् परस्यापि चिन्तयेत्।। १२।।

धारणीय धर्मसार यह है कि आत्मप्रतिकूल का आचरण दूसरों के प्रति मत करो। आत्म अनुकूल आचरण सबके प्रति रखो।

कन्फ्युशियस धर्मसार–

दूसरों के साथ आत्मवत व्यवहार है।। १३।।

लाओत्से का आधार सन्देश–

जीभ के समान रसपूर्ण होना तथा दांतों के समान कठोर न होना है।। १४।।

विश्वव्यापी सहिष्णुता भाव चीन से लेकर अरब तथा पाश्चात्य तक समरूप फैला है। इसमें न समय का न देश का न राजनीति का बाध है। यह ही धर्म शाश्वत है।

भागवत का भाव के साथ शब्द चयन भी उत्तम है–

द्वय अक्षरं मृत्यु भवति त्रय अक्षरं ब्रह्म शाश्वतम्।
ममेति च मृत्यु भवति न मम ब्रह्म शाश्वतम्।। १५।।

मम, मेरा ही मृत्यु है और न मम, न मेरा ही ब्रह्म शाश्वत है।

गीता कहती है–

आत्म उपमेन हि सर्वत्र पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा दुःखं स योगी परमोमतः।। १६।।

यह परम मत है कि आत्मा की उपमा से देखनेवाला सुख और दुःख में भी योगी है।

पुराण–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं।
परोपकाराय पुण्यं पापाय परपीड़नम्।। १७।।

अट्ठारह पुराण सार दो वाक्यों में है, परोपकार पुण्य है परपीड़न पाप है।

वेद का उपनिषद अंग **ईशोपनिषद** कहता है–

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।। १८।।

जो व्यक्ति संसार के प्राणियों को आत्मवत जानता उनसे आत्मवत व्यवहार करता है उसे मोह शोक नहीं होता वह एक ही एक देखता है। ...**(शेष पृष्ठ २३ पर देखें)**

श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक

सम्पादक एवं गणितकर्ता **आचार्य दार्शनेय लोकेश**

ऊर्जमास १ गते (आश्विन शुक्ल पंचमी), २०६६, तदनुसार २३ सितम्बर २००९

भाइयो और बहिनो, नमस्ते!

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की दिव्य दृष्टि ने यह देख लिया था कि तथाकथित पंचांग, वैदिक मार्ग दर्शन के अनुकूल अर्थात ऋतु सम्बद्ध मास व्यवस्थानुसार नहीं हैं। इनका मुख्य उद्देश्य लोगो को फलित ज्योतिष से जोड़े रखना है। अब मेरे प्रयासों से लोगों को यह आश्चर्यजनक जानकारी होने लगी है कि फलित ज्योतिष का गणितीय आधार किस तरह और कितना गलत है। स्वामी जी इस दिशा में स्वयं ही ठोस कार्य कर चुके होते किन्तु उनको मिले अल्प जीवनकाल ने यह नहीं होने दिया। यूं तो मैं गत ३० वर्षों से ज्योतिष से जुड़ा हुआ हूं, किन्तु विगत् १९ वर्षो से मैं आपको सत्य-सत्य गणित आधारित, ऋतु सम्बद्ध तिथि पत्रक देने की दिशा में चलते-चलते सफलता की मंजिल तक पहुंचा हूं। मंजिल तक पहुंचने की साकार प्रगति का नाम है **"श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक"।**

सत्य तो यह है कि नक्षत्र २७ नहीं अपितु २८ हैं। ये सभी आपस में समान नहीं हैं और १३ अंश २० कला का, जैसा कि फलित ज्योतिषियों की जानकारी है, तो एक भी नहीं है। सूर्य की मकर, मेष आदि जो संक्रान्तियां मानी गयी हैं, सब मिथ्या हैं और उन्हीं मिथ्या संक्रान्तियों पर आधारित हैं वर्तमान के तथाकथित पंचांग। विकृत संक्रान्तियों, मनमर्जी के चित्रा आदि समान नक्षत्रों एवं कल्पित राशियों पर नामित चैत्र वैशाख आदि सर्वथा गलत निर्धारित हैं। ये सभी मास मधु, माधवादि **(देखें यजु.०७/३०)** के सही पर्याय नहीं है। इसी प्रकार ऋतुएं "मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतु...." **(यजु.१३/२५)** के अनुसार नहीं ली जा रही हैं। प्रश्न यह है कि जब उत्तरायण, दक्षिणायण, वसन्तादि ऋतुएं और मधु माधवादि मास ही सही नहीं हैं, तो आगे की तमाम गणनाएं और मनमाने ढंग से लिए नक्षत्रों पर आधारित मुहुर्त, योगादि क्या सही हो सकते हैं ? कभी नहीं।

खेद है कि तिथि नक्षत्र दर्शाने वाले पत्रक के मामले में ऋषि दयानन्द के वेदानुयायी आर्य जन भी इन भ्रमपोषी तथाकथित पचांगों पर ही चलते हैं। वे नहीं जानते हैं कि नामकरणादि, संस्कार में जिस नक्षत्र नाम से वे आहुति करते हैं, क्या उस समय वह नक्षत्र होता भी है? नहीं जानते हैं कि दीपावली, विजयदशमी, रक्षाबन्धन इत्यादि पर्व, वे जब मनाते हैं तो क्या उनका शास्त्र सम्मत् योग उस दिन है भी कि नहीं ?

अस्तु, पार्विक तिथियों का शुद्ध निर्धारण दर्शाने वाले वैदिक सिद्धान्त सम्मत् एक आदर्श या आर्ष तिथि पत्रक की महती आवश्यकता बनी हुई थी। मेरे ही नहीं, वैदिक आस्था से जुड़े हर मानव के लिये गौरव की बात है, कि सदियों से चली आ रही इस कमी की पूर्ति कर ली

गयी है। संवत् २०६४ से प्रकाशित होता आ रहा **"श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक"** इसी पूर्ति का दूसरा नाम है। आर्ष गुरुकुल, वडलूरू (आ.प्र.) के आचार्य प्रवर, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, का इस कार्य में तन-मन-धन का बड़ा सहयोग रहा है। वे आर्य समाज के एक मात्र तथा साधिकार ज्योर्तिविद् हैं और उन्होंने इस तिथि पत्रक के स्वीकरण हेतु प्रेरक निवेदन भी किया है। लेकिन अब बारी आपकी है। बारी है कुछ कर दिखाने की।

पुरोहितों, आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सामान्य सदस्यों, सभी को यह तिथि पत्रक प्राप्त कर लेना चाहिये और तद्नुसार ही पर्वादि मानने-मनवाने का उपदेश करना चाहिये। संस्कारों में उपयोगी संकल्पादि के लिये पत्रक के अनुसार ही तिथि नक्षत्रादि का उच्चारण करना चाहिये। यज्ञ में इनके सन्दर्भ से उपयुक्त आहुति करनी चाहिये। यही आर्ष उपदेश है। आर्य समाज के दस नियमान्तर्गत सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना ही आपका लक्षण है, आपकी पहचान है। सभी को समझना चाहिये कि आज एक बार फिर इस पहचान के परीक्षण की घड़ी सामने आयी है।

पत्रक की गणित का कार्य भले ही दुष्कर है किन्तु गणित करके दिये गये अर्थात् प्रकाशित पत्रक को पढ़ना किसी आम पढें-लिखें व्यक्ति के लिये कुछ भी कठिन कार्य नहीं है। थोड़ी सी जागरूकता, थोड़ी सी जिज्ञासा ही आपको इतना कुछ सिखा सकती है। इसके अभाव में इस शुद्ध वैदिक अर्थात आर्ष तिथि पत्रक का प्रकाशन जारी रखना सम्भव नहीं होगा।

देश की समस्त आर्यसमाजों से मेरा अनुरोध है कि वे कम से कम ५ पत्रक-प्रतियों का आदेश अवश्य करें। **लागत मूल्य ७५/= रु. और डाकव्यय २४/= रु. होगा।** अभी पत्रक का आरम्भिक समय है। प्रकाशन, कम प्रतियों में होने से लागत मूल्य अधिक आ रहा है। धीरे-धीरे अधिक संख्या में प्रतियां प्रकाशित होने लगेंगी तो निश्चित ही मूल्य में न्यूनता आयेगी।

समर्थ एवं दानवीर महानुभाव इस सांस्कृतिक यज्ञ में उदार आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु आगे आयें। इससे भी पत्रक का मूल्य घट जायेगा। पुरोहितों, गुरुकुल संचालक आचार्यों, आर्य समाजों के विद्वान अध्यक्षों, सभासदों, जिला एवं प्रान्तीय स्तर के कार्यकर्ताओं तथा पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक महानुभावों आदि सभी से खास विनती है कि वे **"श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक"** रूपी सांस्कृतिक जागरण के महान प्रयास को सफल करने में आ रही आर्थिक कठिनाईयों पर विजय पाने के लिये सहृदयता पूर्वक योगदान करने का कष्ट करें। शुभस्य शीघ्रम्। ओ३म् शम्।

(आचार्य दार्शनेय लोकेश)

"श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक"
सी-२७६, गामा-प्रथम, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) २०१३१०
फोन नं. ०१२० ६५४४६२८, +९१ ९४१२३५४०३६

आर्य समाज सिद्धान्तसार

आर्य समाज सिद्धान्तों के कारण ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्था है। **“आर्य सदस्य”** वह है **“जो प्रसन्नतापूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यों को (जैसा कि दस नियमों में वर्णन किए गए हैं) तथा मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों को (जो वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में लिखे गए हैं) मानता और उनके अनुकूल आचरण करना स्वीकार करता है।”** (उपनियम ३)

१७ जनवरी जिस दिन डॉ.त्रिलोकीनाथ जी का महानिर्वाण हुआ, उसी दिन आर्य समाज सेक्टर ६ भिलाई में साधारण सभा की बैठक में इस परिपत्र पर चर्चा होकर प्रस्ताव पारित किया जाना था... “आर्यवीर”

आर्य सभासद वह है : १) जिसका नाम आर्य समाज में सदाचारपूर्वक (सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार, पत्नी व्रत वा पतिव्रत, आदि सदाचार हैं) दो वर्ष तक अंकित रहा हो। २) जो अपनी आय का शतांश या २५० रु. वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो। ३) जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत हो। ४) अन्तरंग सभा द्वारा उपस्थिति या चंदा शतांश से कम देने के मामले में पांच-पांच प्रतिशत तक अपवाद स्वरूप छूट प्रदान करने पर उन्हें भी सभासद माना जाएगा। ५) वह (आर्य सभासद) यह प्रतिज्ञापत्र अवश्य भरेगा- “मैं ईश्वर के प्रतीकस्वरूप किसी मूर्तिपूजा या जड़ वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा लहीं करूँगा, ना हि मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि-विधान को नहीं मानूंगा। अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नहीं करूँगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआछूत को नहीं मानूंगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी नहीं बनूंगा। मैं आर्य समाज के नियम-उपनियमों में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करूँगा। यदि मैं इसके विपरीत आचरण करूँ तो मेरी सभासदी समाप्त कर दी जाए।” {उपनियम ४ (क), (ख), (ग), (घ) तथा सार्वदेशिक सभा के २०/६/१९८७ के अन्तरंग के निश्चयानुसार}

अन्तरंग सभा सदस्य :- १) प्रधान, मन्त्री या संस्था प्रबन्ध सभा अध्यक्ष न्यूनतम तीन वर्ष तक निरन्तर सभासद। २) अन्य अधिकारी सा सदस्य दो वर्ष तक निरन्तर आर्य सभासद। ३) साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति न्यूनातिन्यून ३३ प्रतिशत हो (उपनियम १७)।

आर्य सदस्य एवं सभासदों का मुख्य कर्तव्य :- साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति (उपनियम ३२)।

उपनियम संशोधन अधिकार :- किसी भी आर्य समाज को या प्रांतीय सभा को उपनियम घटाने बढ़ाने अथवा उसमें संशोधन करने का अधिकार नहीं है। (उपनियम ४४)।

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय पुण्य संस्मरण

आदरणीय श्रद्धेय मेरे पापाजी, उनके विषय में लिखना जैसे सूर्य को दीपक दिखाना। कठोर व दृढ़ व्यक्तित्व के अन्तस में इतना मृदु व विशाल हृदय, जिनके लिए सभी समान थे, सभी के लिए प्रेम के साथ-साथ सभी को अनुशासनबद्ध होने के लिए प्रेरित करना तथा अपना जीवन ऊँचा व सार्थक बनाने का सन्देश। आप हमेशा कहते थे प्रत्येक रिश्तों को वैदिक परिभाषाओं की तरह जीयो। मुझे समझ में नहीं आता था कि कि रिश्ते परिभाषाओं में कैसे बंध सकते हैं। पर आज समझ में आ रहा है कि मनुष्य परिभाषाओं में जीकर ही सच्चा कर्मयोगी बन सकता है। वो अपने आस-पास सभी रिश्तों के प्रति पूर्ण कर्तव्यों के निर्वाह पश्चात् भी उनमें लिप्त नहीं होता है। मोह उसे अपना ग्रास नहीं बना सकता। पापाजी हमेशा कहते थे बेटी इस संसार में मुझे ना किसी से राग है ना द्वेष। इतना होने पर भी उन्होंने अपने सभी रिश्ते चाहे सामाजिक हों या पारिवारिक शत-प्रतिशत निर्वाह किए। इस संसार की छोटी से छोटी चीजों से जुड़कर भी इनसे पूर्णतः निर्लिप्त रहते थे।

उनका ध्येय ब्रह्म प्राप्ति था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसे उन्होंने प्राप्त किया है। वे हमेशा कहते थे- ऊँचा उठो, ऊँचा सोचो, निरर्थक एवं छोटी-छोटी बातों में अपना समय व जीवन कभी बरबाद मत करो। वे आते-जाते सड़क पर सभी से एक रिश्ता बना लेते थे। मुझे ऐसा पूर्ण विश्वास है हर कोई जो उनके सम्पर्क में आया है कुछ न कुछ सार्थक ज्ञान अवश्य प्राप्त कर चुका है।

यह मेरा सौभाग्य है कि उनके बचपन तक के विषय में अपनी दादा जी से सुनती आयी हूं। विवाह पूर्व ही मुझे पता था कि वे एक सिद्धान्तप्रिय व्यक्ति हैं। मुझे लगा था कितने कठोर होंगे। पर जब उनसे पहली बार मिली तो उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख इतने प्यार से बात की तो लगा मानों मुझे दूसरे पिता मिल गए हैं। आप हमेशा समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन देते रहे। वे अपने जीवन को पूरे उल्लास के साथ जीए। अपने जीवन में ऐसा जीवन्त व्यक्तित्व अभी तक दूसरा नहीं देखा है। हर पल हर क्षण ज्ञान बांटना उनकी विशेषता थी। भोजन करने से पूर्व उदात्त वाक्य बोलते तथा बुलवाते थे। हमेशा हर किसी से पूछते क्या नया पढ़ा ? हर किसी से उसका नाम पूछते फिर उस नाम का अर्थ बताते व कहते अपने नाम को सार्थक करो। जैसा उन्होंने स्वयं अपने नाम को भी सार्थक जीया है। रात के समय बिजली भाग जाए तब हम सभी को बिठाकर भजन कहने के लिए प्रेरित करते। सत्यार्थ प्रकाश को बार-बार पढ़ कर उसे जीवन में उतारने की प्रेरणा देते। वे कहते समझकर पढ़ो, रोज पढ़ो। बार-बार पढ़ो जब तक समझ में न आए। वे मात्र अपने उत्थान नहीं अपितु सबकी उन्नति

के लिए प्रयत्नशील रहते थे। उनकी मुझसे बहुत अपेक्षाएं थीं। कहते थे विनीता तुम्हें प्रयास करना होगा कि एक महिला संसद हो। मेरे लिए तुम्हें इस काम को करना है। स्त्री-पुरुष की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएं हैं, अतः उनकी संसद भी भिन्न-भिन्न ही होनी चाहिएं। इतना गुरुतर कार्य मुझ अकिंचन से कैसे सम्भव है ?

मेरी दादी जी द्वारा बताया गया एक प्रसंग स्मरण हो रहा है, इस संस्मरण से पता चलता है कि उन जैसा साहसी, आत्मविश्वास से पूर्ण व्यक्तित्व दुर्लभ है- पापाजी ने जब इंजीनियरिंग पास की तथा नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जा रहे थे तो उनके सभी घरवाले इस बात को लेकर उत्साहित थे। उनके बड़े मामाजी जो सम्पूर्ण जिले के हेड पोस्ट मास्टर थे ने उनके कपड़ों को अच्छी प्रकार प्रैस करके उन्हें देते हुए कहा कि कपड़े भी अच्छे व्यक्तित्व का एक अंग हैं। इस पर उन्होंने कपड़े मोड़-मोड़ कर प्रैस बिगाड़ दी तथा उनको गन्दा भी किया और कह दिए कि यदि उन्हें कपड़ों को नौकरी देनी है तो मैं ऐसी नौकरी हेतु तैयार नहीं। और साक्षात्कार देने चले गए। उन्हीं गन्दे कपड़ों में उन्हें बी.एस.पी. में अभियन्ता पद के लिए चुना गया था।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि उन्हें मोक्ष प्रदान करे, जिसके लिए वे आजीवन प्रयासरत रहे।

विनीता क्षत्रिय

आपके अनेक विधाओं में ज्ञान और आप के धैर्य अतुलनीय रहे हैं।

बी.डी.साहू, स्मृति नगर

ऐसे योग्य व्यक्ति समाज में बहुत कम होते हैं जो इतना विद्वान् होते हुए भी दूसरों की सेवा करने में स्वयं सुख अनुभव करता हो।

एम.एल.शर्मा, स्मृति नगर

डॉ.क्षत्रिय- मानवता का दूसरा नाम

सन १९६२ में जब मैं भिलाई में आ बसी तब मेरी शिक्षा केवल मैट्रिक एवं मौंटेसरी कोर्स तक सीमित थी। हिन्दी की प्रारम्भिक प्रवेश परीक्षा नागपुर में ही उत्तीर्ण कर ली थी। थोड़े-बहुत प्रयासों के उपरान्त ज्ञात हुआ कि सेक्टर ६ में आर्य समाज द्वारा विद्यालय खुल रहा है। साक्षात्कार के समय प्रथम बार मेरा परिचय स्व.रवि आर्य, श्री.गुलाबचन्द बंसल जी के साथ डॉ.क्षत्रिय जी से हुआ था। प्रधान अध्यापिका के पद पर मेरी नियुक्ति हुई। तब से निरन्तर श्री रवि आर्य जी एवं डॉ.क्षत्रिय जी हमारे मार्गदर्शक रहे हैं। आप संकट के समय हमारी समस्याएं सुलझाने में सदैव तत्पर रहे। डॉ.क्षत्रिय जी को मैं भाई साहब कहकर सम्बोधन

करती थी। उन्होने ही मुझे आगे की शिक्षा हेतु प्रेरित किया। और मैं धीरे-धीरे बी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। मेरे इस यश में मेरे जीवन सहचर एवं कौटुम्बिक सदस्यों के अलावा श्री रवि आर्य एवं डॉ.क्षत्रिय जी की सक्रिय भागिदारी रही है। बी.एड. और नौकरी दोनों एक साथ नहीं होता देख तथा इससे शाला कार्यों में व्यवधान होता देख मैंने शाला प्र.अध्यापिका पद से इस्तिफा दिया और सरसवती शिशु मन्दिर में शिक्षिका पद स्वीकार किया। यद्यपि आर्य समाज से दूर रही किन्तु स्नेह सम्बन्ध दृढ़ ही रहे। जब कभी भेंट होती डॉ.साहब मुझे हमेशा धीरज एवं प्रोत्साहन देते।

दिन, माह, वर्ष बीतते गए, फिर भी हम लोग किसी न किसी जगह उतनी ही आत्मीयता से मिलते रहे। डॉ.साहब मुझे दीदी कहकर बुलाते थे। साहित्यिक क्षेत्र में वे अग्रणी थे ही साथ ही साथ वे एक अच्छे इन्सान और समाजसेवी भी थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् उन्होंने सारा समय गरीबों को समर्पित किया था। वे पूर्णतया आर्य समाज एवं वेद के कार्यों में लगे रहे। अपने निवास पर उन्होंने कई साहित्य सभाएं "प्रसांत संसद" के द्वारा सम्पन्न की। यथा सम्भव उनकी सभाओं में जाती-आती रही। आप निराकार निर्गुण के उपासक थे। ईश्वर ओ३म् में समाया है इस बात पर वे आखिर तक कायम रहे। ऐसी ही एक सभा में उन्होंने मुझ से प्रश्न किया था "क्या आपने ईश्वर देखा है ?" मेरे हां कहने पर मुझे पूछा "कहां देखा है, जरा कहो तो" मैंने विनम्र होकर कहा- "मेरे सम्मुख तो है" वे हंसकर बोले- "मुझे ईश्वर समझ रही दीदी" मैंने कहा था "हां, संकट के समय जो सहायता करे, मार्गदर्शन दे वही मेरा ईश्वर है।" वे खिलखिलाकर हंस दिए और कहा "तुमसे तो बहस बेकार है"

हमारी पारिवारिक समस्या से जब अवगत हुए तब लगातार एक माह तक मेरे घर हाल-चाल पूछने आते रहे। धैर्य बंधाते रहे। जन-मानस में उनकी छबी क्या थी मैं नहीं जानती। पर मेरे हिस्से सदैव उनका स्नेह और मार्गदर्शन ही आया। यादें अनगिनत हैं, लिखना चाहें तो एक किताब बनेगी। सम्माननीय डॉ.क्षत्रिय जी को मेरी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि। मरणोपरान्त अपना शरीर दान देकर वे अमर हो गए हैं। ऐसी महान् विभूति को मेरा, मेरे परिवार का शत-शत प्रणाम !

श्रीमती पद्मा जोशी, भिलाई

परम आदरणीय भापाजी जो जीवनमुक्त (समस्त सांसारिक बन्धनों से मुक्त) जीवन को जीने में विश्वास रखते थे और वैसा ही जीवन उन्होंने जीया। एवं दूसरों को चाहे वे सगे सम्बन्धी हों अथवा अन्य कोई सभी को जीने की प्रेरणा देते रहे। जहां तक इस देह का प्रश्न है इस सम्बन्ध में उनका यही विचार था कि यह देह सदैव प्राणिमात्र के लिए उपयोगी एवं कल्याण

का माध्यम बने।

अतः जो व्यक्ति उनके सानिध्य में आया है, अथवा उनके उपदेश भजन साहित्य इत्यादि को देखा, सुना अथवा पढ़ा है, उसका यही कर्त्तव्य है कि वह सदैव उनके जीवन के मूल्यवान आदर्शों व सिद्धान्तों से प्रेरणा लेते हुए उसे अपने जीवन में धारण करे।

इस महान् विभूति की आत्मा जो कि प्राणों के साथ नश्वर देह में विद्यमान थी, समय के कालचक्र के पूरा होने के साथ परमपिता परमेश्वर में समाहित हो गई। उनके चरणों में शत-शत नमन !

प्रताप विक्रम सिंह, वाराणसी

भिलाई स्थित स्व.सुशीलादेवी की सुपुत्री तारा (वर्तमान सुधा) से मेरा विवाह ६/५/१६८४ को हुआ था। सुधा के साथ जब भी मैं भिलाई आया भैया (डॉ.क्षत्रिय) से मिले बिना कभी नहीं रहा।

उनके साथ रहना हमारे लिए परीस स्पर्श जैसा था। जैसे लोहा परीस को छूते ही सोना बन जाता है वैसे ही हमारा जीवन भी उनके साथ बातचित भर से ही मन प्रफुल्लित हो उठता था।

पल-पल उनकी याद आएगी। उनके बताए पथ पर निरन्तर चलते-चलते उन्हीं की तरह मरणोपरान्त भी किन्हीं के काम आएं यही प्रण करके भैया के प्रति आदरांजलि व्यक्त करते हैं।

शान्तिलाल हरिलाल, गढ़चिरौली

भैया जैसा मैंने उन्हें जाना, एक प्रेरणास्पद व्यक्तित्व, स्नेहिल-सहृदय, घर के बुजुर्ग. ... किन-किन विशेषताओं की चर्चा करें... एक सम्पूर्ण व्यक्ति, जीवन से भरपूर, जीने की-कर्म करने की प्रेरणा देता आह्वान। मुझे तो उनमें सदा ईश्वर के दर्शन होते थे।

कभी भी कोई भी समस्या हो उसके समाधान के लिए सदैव तत्पर रहते थे। साहित्य चर्चा, किसी लेख, किसी कविता पर विचार-विमर्श से तो मानों एक ऊर्जा आ जाती थी उनमें। अनवरत बोलते रहने का अदम्य बल महसूस करते थे। मानों यही उनकी खुराक थी। लिखने-पढ़ने के लिए सदा प्रेरित करते रहते थे। अक्सर पूछते थे “क्या नया पढ़ा ?”

और अब ! ये सब यादें रह गई हैं... अधूरापन रह गया है। रिक्तता की यह अनुभूति तोड़ देनेवाली है। यह रिक्तता कदाचित कभी भर नहीं पाएगी। नियति का यह आघात. .. ऐसा आघात पहले कभी महसूस नहीं किया। वज्राघात कुछ ऐसा ही होता होगा।

मन को मनाता हूं, भैया आज भी हमारे बीच में हैं। आगे बढ़ने का कर्म करते रहने

का आशीर्वाद देते हुए। बहुत कुछ अव्यक्त रह गया कदाचित... भैया को शब्दों में बांधना सरल नहीं है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

गिरधर रायचा, भिलाई

डॉ.क्षत्रिय जी मेरे लिए भाई, पिता, गुरु, सखा के रूप में बहुत कुछ थे। उनके सानिध्य में रहकर बहुत कुछ सीखा है। जीवन क्या है, मृत्यु क्या है यह सब पहचाना है। आज मैं जो कुछ भी हूं उनके ही कारण हूं। जब मैं ५-६ साल की रही हूंगी तभी मेरा प्रथम परिचय उनसे हुआ था। आज मैं ५७ वर्ष की हूं। बचपन से लेकर अब तक उनके साथ मैंने लम्बा समय गुजारा है। मेरे हर सुख-दुःख में वे हिस्सेदार रहे हैं। सार्थक जीवन क्या होता है यह उन्हीं से जाना है। लोग कहते हैं संसार में ईश्वर है, ईश्वर को मैंने नहीं देखा है, पर हां भैया के रूप में मैंने ईश्वर ही के दर्शन सदैव किए हैं।

छल-कपट, राग-द्वेष से दूर इस प्रकार का व्यक्तित्व मैंने कहीं नहीं देखा। मुझे तो लगता है कि वे ईश्वर के दूत के रूप में आकर इस धरती पर लोगों को बहुत कुछ देना चाहते थे। और उन्होंने दिया भी है। यदि हम उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलें उनकी बातों का अनुसरण करें तो यही हमारी सही मायने में श्रद्धांजलि होगी।

पुष्पा रायचा, भिलाई

मेरे प्रिय नाना जी, आप हमें क्यों छोड़कर चले गए ? घर में सब कितना रोते हैं, और आपकी याद भी बहुत आती है। अब मैं अंकुरित किसके साथ खाऊंगी ? जब भी वे मुझे बजार ले जाते तो बहुत सी चीजें खाने को देते। जब भी वे ऊपर के कमरे में संध्या करते हम दोनों भाई-बहन वहां जाकर मस्ती किया करते थे। तब वे दरवाजा बन्द करके संन्ध्या करने लगे। थोडे दिनों के बाद जब नानी ने मुझे कहा कि जाकर देखो ऊपर नानाजी क्या कर रहे हैं ? मैं जाकर देखी तो दरवाजा बन्द था। जब नानाजी नीचे आए तो नानी जी उनसे पूछी क्यों दरवाजा बन्द रखते हो ? अब हम आप को कोई भी तंग नहीं करेंगे। मेरे बारे में नाना जी कहा करते कि ये हिन्दी अच्छी बोलती है। नानाजी ने मुझे गायत्री एवं अन्य वेदमन्त्र अर्थ के साथ सिखा दिए हैं।

आपकी नातिन दिवि, तीसरी 'द'

प्यारे बेटे, आप जैसा ज्ञानी संस्कारित पुरुष हमने कभी नहीं देखा। आप जैसे महान पुरुष दुनियां में बहुत ही कम होते हैं जो हमेशा दूसरों की सोचते हैं। जाते समय भी आप इतना बड़ा दान करोगे जो सिर्फ महान पुरुष ही कर सकते हैं। भगवान आप जैसे पुरुष को सद्‌गति प्रदान करे।

कृष्णा जुल्का, भिलाई

पृथ्वी – ब्रह्म
आकाश – ब्रह्म
जल – ब्रह्म
वायु – ब्रह्म
अग्नि – ब्रह्म
त्रिलोकीनाथ – ब्रह्म

त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय को सही श्रद्धांजलि उनके सही आदर्शों को आत्मसात करना है। हर जीव को तीन वस्तुओं की जरूरत पड़ती है। **१.धन, २.आदर और ३.प्यार।** तुम्हारे पास काफी समय है, सोचो तुमने उनके साथ ऐसा करते समय कोई गलती तो नहीं की ? यदि नहीं की है तो बहुत अच्छी बात है। यदि इसका उल्टा किया है तो कम से कम भविष्य में दूसरों के साथ ऐसा मत करो। जीवन एक सुनहरा मौका है उसका सही उपयोग करोगे तो पश्चाताप के लिए जगह कहां है ?

बी.एन.पानोरे, भिलाई

त्रिलोकी, मेरा बचपन का साथी। तुम्हारा जीवन एक अनमोल धरोहर थी। तुम हम लोगों को छोड़ कर अचानक रूठ कर चले गए। तुम्हारा साहित्य, विचार एवं भावना अद्भुत् थी। मैने अपना मित्र मार्गदर्शक खो दिया है। तुम्हारे सरीखा मित्र पाना मैं हर जीवन में चाहूंगा। शायद हम लोग फिर मिलेंगे। शत-शत प्रणाम !

डॉ.जितेन्द्रकुमार खण्डेलवाल, आसनसोल

पाखी जिस तरह
एक पेड़ से उड़कर
सहजत:
बैठ जाता है दूसरे पेड़ पर
मैं भी
ठीक उसी तरह
सहजत:
यह तन तजकर
बैठ जाऊंगा “ब्रह्म तन” पर
पाखी नहीं हूं न ?
मनु हूं न।।
‘भापा’ (२९/५/२००९)

“सड़क-संभोग” आजादी और प्रजातन्त्र

दूरदर्शन ने ड्राईंग रूम को बेडरूम कर दिया है। फिल्म घरों ने सिनेमाओं को बेडरूम कर दिया है। मरीन ड्राइव्ह, मैत्रीबाग, बस स्टैण्ड और तो ओर प्रजातन्त्री आजादी ने सड़कों को भी बेडरूम कर दिया है। “सड़क-संभोग” की प्रजातन्त्री आजादी की सरे आम वकालत हो रही है। कुछ देशों में तो “बीच-संभोग” को मान्यता भी है। “सड़क-संभोग” कुत्ता-कुतिया, चिड़िया-चिरौंटा, गाय-सांड, बकरा-बकरी व्यवस्था का नाम है। प्रजातन्त्र भी इसी व्यवस्था का नाम है। “आदमी-व्यवस्था” के “पशु-व्यवस्था” तक पतन का नाम है प्रजातन्त्र। एक समझदार आदमी को तो तनिक भी इसे सहन न करना चाहिए... (साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

स्व.डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय पुण्य संस्मरण संगोष्ठी सम्पन्न

प्रसांत संसद द्वारा सांतसा (सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक) मासिक पत्रिका का स्व. डॉ.त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय श्रद्धांजलि अंक का विमोचन एवं उनके पुण्य संस्मरणों पर चर्चा संगोष्ठी का आयोजन दिनांक २५/०२/२०१० गुरुवार सायं ५.०० बजे से प्रसांत भवन बी–५१२, सड़क ४, स्मृतिनगर में किया गया । मुम्बई से पधारे सांतसा के सम्पादक ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर" ने चरैवेति सूक्त पठन से कार्यक्रम की शुरुआत की। श्रद्धांजलि अंक में अपने आधार आलेख पठन द्वारा आपने डॉ.क्षत्रिय जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के अपने संस्मरण सुनाए। डॉ.राधेश्याम सिन्दूरिया ने डॉ.क्षत्रिय जी के साथ २० वर्षों के सानिध्य में उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर हृदयस्पर्शी संस्मरण सुनाते कहा कि आप द्युलोक, पृथ्वीलोक, पाताललोक के बारे में वैदिक सोच रखते हुए पूर्णरूपेण आधिकारिक ज्ञान रखते थे। श्री दिलीप आर्य ने अपने संस्मरण सुनाते हुए डॉ.क्षत्रिय द्वारा लिखा प्रस्ताव एवं आर्य समाज में सदस्यता सुधार का उनका आधार आलेख पढ़ा जिसे वे अपने निर्वाण के दिन १७ जनवरी को आर्य समाज में खुद पढ़नेवाले थे। श्री सि.ला.सचदेव जी ने कहा– डॉ.क्षत्रिय आर्यत्व के मूर्तिमान रूप थे। अपने ही सदृश वे हर किसी को आर्य अर्थात् चरित्र से श्रेष्ठ बनाने में ताउम्र प्रयत्नशील रहे। श्री राघवेन्द्र जी पाल ने कहा कि उनकी सादगी, सत्याग्राहिता, बेबाक टिप्पणी, आकूत तर्कणाशक्ति आदि गुणों के कारण ही मैं उनसे जुड़ा रहा। शान्तिस्वरूप जैन ने अपने ४५ वर्षों के उनके साथ के संस्मरण सुनाते कहा कि कॉलेज में विद्यार्थी काल से ही उपेक्षितों, निराश्रितों एवं असहाय विद्यार्थियों को सहाय, प्रेरणा, प्रोत्साहन आदि देने में सदैव अग्रणी आप रहे हैं। महेन्द्र गुप्त ने अपने संस्मरण सुनाते कहा कि यद्यपि ४-५ बार ही डॉ.क्षत्रिय जी से मिलना हुआ किन्तु उनके अपनत्वभरे व्यवहार ने हमें उनकी ओर आकृष्ट किया था। श्री मुत्थुस्वामी ने कहा जब अन्य साहित्यकार मुझ सदृश् अहिन्दी साहित्यकार की खिल्ली उड़ाया करते उस वक्त डॉ.क्षत्रिय जी ने हौसला बढ़ाया है तथा हर तरह से प्रोत्साहित किया है। मैं तो उनमें ईश्वरीय गुण देखता हूं।

श्रीमती पद्मा जोशी ने डॉ.क्षत्रिय जी को मानवता का पुजारी बताते कहा कि अन्यों के दुःख प्रसंगों में दृढ़ता से साथ देने में उनका कोई सानी नहीं है। अपने जीवन का दुःख भरा एक ऐसा ही संस्मरण सुनाते कहा कि उस कठिन घड़ी में डॉ.क्षत्रिय एक माह तक सतत घर पर आते रहे और ढाढस बंधाते रहे। श्रीमती किरण खोसला ने अपने संस्मरणों में कहा कि हमारे बीच विभिन्न विषयों पर स्वच्छन्द तर्क-वितर्क हुआ करते। वे मुझे वेद पढ़ने की सदैव प्रेरणा देते रहे। लिटररी क्लब के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघई ने कहा ३ दशकों से भी अधिक

"न्याय दृष्टि एवं प्रजातन्त्र"

तटस्थता, न्याय दृष्टि जो न्यायदर्शन से मिलती है की ही हत्या है प्रजातन्त्र। न्याय श्रेष्ठतम संकल्पना है। प्रजा ओसततम संकल्पना है। इन दोनों में कोई भी कहीं भी मेल नहीं है। प्रजातन्त्र भयानक बेमेल है। इसमें हर पल न्याय की हत्या ही हत्या है। इसमें और तो और वचनभंगों की भरमार ही भरमार है। एक आम आदमी अपने जीवन में प्रजातन्त्र जितना घटिया न्याय उसके जितनी घटिया वचनभंगता एक पल भी नहीं जीता न जी सकता है। हरेक प्रज आदमी प्रजातन्त्र से श्रेष्ठ है अतः प्रजातन्त्र की इसी क्षण हत्या आवश्यक है। (साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

समय से डॉ.क्षत्रिय जी का साथ रहा है। आप सामान्य व्यक्ति होते हुए भी असामान्य जीवन जीए। बड़ी से बड़ी सभा में भी अपना प्रांजल मत या असहमति जताना नहीं चूके। वे सच्चे अर्थों में ज्ञान पिपासु थे। विद्रोही स्वभाव के होते हुए भी कभी दुराग्रही नहीं रहे यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। श्री तुगभद्र राठौर ने डॉ. क्षत्रिय को अवसरवादी दुनियां में दृढ़ता से कदम रखनेवाले व्यक्तित्व बताते कहा आप सदृश ईमानदार पाठक, श्रोता तथा समीक्षक समाज में दूसरा नहीं दिखाई देता। मीरा मिश्रा ने भावुक होकर उनके आखरी साहित्य संगोष्ठी के संस्मरण सुनाए। शुचि क्षत्रिय ने अपने पिता द्वारा बचपन में पढ़ाने के अपने संस्मरण सुनाते हुए अपने पिता के जन्मदिवस पर उन्हीं पर लिखी कविता का पाठ किया।

श्रीमती पुष्पा रायचा ने अपने संस्मरण सुनाते कहा कि बचपन से लेकर अब तक जीवन के हर सुख-दुःख में भैया मेरे साथ रहे हैं। शिवकुमार शर्मा ने अपने ७ वर्षों के संस्मरण सुनाते कहा डॉ.क्षत्रिय जी समाज में बड़े परिवर्तन के आकांक्षी थे। उदाहरण स्वरूप उनसे जुड़े हर किसी के लिए हैलो के बदले स्वस्ति-स्वस्ति का उनका नारा था। श्री.गिरधर रायचा ने कहा कि विगत ३४ वर्षों से बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान चुटकियों में किया करते। आप स्वयं कभी तनावग्रस्त नहीं हुए तथा अन्यों को भी तनाव से मुक्ति दिलाते रहे। नमित क्षत्रिय ने अपने पिता के साथ गरीब बस्तियों में बच्चों के खेल शिविरों के संस्मरण सुनाए। श्री.पानोरे जी, श्रीमती राखी मिश्रा, श्रीमती सुदेश क्षत्रिय, श्री पवन लीखा एवं कुमारी दिवी लीखा ने भी संगोष्ठी में भाग लिया। "आर्यवीर" द्वारा डॉ.क्षत्रिय जी रचित भजनगान एवं शान्तिपाठ के बाद लगभग ३ घण्टों तक चली सभा विसर्जित की गई।

नमित क्षत्रिय
(प्रचार सचिव, प्रसांत संसद, भिलाई)

सांतसा न्यास के लिए इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन सम्पादक ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर" द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित कराया गया। मुद्रक : प्रिंटकॉन, अहमदाबाद ☎०७९–३२९८३११८